॥ ओ३म् ॥

प्रभु से विनय

हे प्रभु! तू कल्याण करने वाला है। आज तू हमें क्यों प्रेरित नहीं कर रहा है। हम भी तो तेरी सृष्टि में आये हैं। संसार भी तो आपका बनाया हुआ है। भगवन्! आपने इन दुराचार और इन पाप कर्मों को क्यों रचाया? आज प्रभु! इनको न रचाते तो हम संसार में पापी न बनते। प्रभु आज हम पापी हैं। हमें अपने कण्ठ से लगा। आज हमें प्रेरणा देकर उन पाप भावनाओं को समाप्त करा, प्रभु! हम ज्ञानाग्नि में इन्हें भस्म करना चाहते हैं। विधाता! हम तेरी शरण के लिए महानता चाहते हैं, प्रभु! तेरी सहायता चाहते हैं। हमें वह सहायता दे, जिससे हम ब्रह्म के समीप जायें, हम यज्ञशाला में जायें, अग्नि प्रज्वलित करें और देवताओं को हवि दें। देवता उसे पाकर प्रेरणा देंगे जिन प्रेरणाओं को पाकर, प्रभु! हम तेरी गोद में आ जाएँगे। हे कल्याणकारी प्रभु! आप कहाँ हैं? आज हमारे कल्याण के लिए योजना बना। हम तेरी संसार रूपी यज्ञ वेदी पर आये हैं, हमें प्रेरणा दे। हमें महान् बना। हम वास्तविक ब्रह्मा बनें, योगी बनें। हे विधाता! आज हम अपना ही कल्याण नहीं चाहते, हम संसार का भी कल्याण चाहते हैं।

पूज्यपाद-गुरुदेव

अंक : 584 कुल पृष्ठ संख्या समग्र अंक : 659
वर्ष : 50 44 समग्र वर्ष : 56

अनुक्रम

क्रम संख्या	विषय	पृष्ठ संख्या
1. प्रभु से विनय	पूज्यपाद-गुरुदेव	3
2. अनुक्रम		4
3. अहिंसा परमोधर्म की विवेचना	पूज्यपाद-गुरुदेव	5-20
4. विष्णु	पूज्यपाद-गुरुदेव	21-36
5. यज्ञ का स्वरूप	पूज्यपाद महानन्द जी	37-39
6. ऋषियों के उद्‌गार		40
7. दान, पुस्तकों की सूची व पुस्तक प्राप्ति के स्थान तथा सूचना इत्यादि		41-42

चतुर्वेद ब्रह्म पारायण महायाग

परमपिता परमात्मा की असीम अनुकम्पा से एवम् पूज्यपाद-गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज (पूर्व शृङ्गी ऋषि जी) के शुभ आशीर्वाद से प्रति वर्ष की भाँति इस वर्ष भी चतुर्वेद ब्रह्म पारायण महायाग का आयोजन लाक्षागृह बरनावा में श्री महानन्द संस्कृत महाविद्यालय के प्रांगण में दिनाँक 6 मार्च, 2022 से 13 मार्च, 2022 तक बड़े हर्ष एवम् उल्लास के साथ आयोजित किया जा रहा है जिसमें आप सब अपने सम्बन्धियों व मित्रों सहित सादर आमन्त्रित हैं।

श्री गाँधी धाम समिति (पञ्जी.)

आप सभी को महाशिवरात्रि की हार्दिक शुभकामनाएँ।

॥ ओ३म् ॥

अहिंसा परमोधर्म की विवेचना

जीते रहो!

देखो मुनिवरो! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भाँति कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। हमारे यहाँ परम्परागतों से ही, उस मनोहर पवित्र वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में, उस मेरे देव परमपिता परमात्मा की महानता का वर्णन किया गया है, जिस वेदवाणी में, उस मेरे देव परमपिता परमात्मा की महानता का वर्णन किया गया है। आओ मेरे प्यारे! आज हम उस परमपिता परमात्मा की महिमा का ऋषिवर! गुणागान गाते चले जा रहे थे, जो परमपिता परमात्मा सदैव हमारे जीवन का साथी बना हुआ है। हमें एक महान् उज्ज्वल जीवन प्रदान करता चला जा रहा है।

प्रभु की महिमा का गुणगान

आओ मेरे प्यारे! आज हम उस महामना देव जो संसार का ऋषिवर! मनोहर रचियता है, **अहिंसा परमोधर्म का धर्मज्ञ है,** उस परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाते हुए, क्योंकि मानव का जो सबसे प्रथम जो लक्ष्य है, वह आनन्द को प्राप्त करना है। वह कहाँ प्राप्त होता है? जहाँ उस, वह आनन्दमयी उसे प्राप्त करने लगता है। मेरे प्यारे! इसीलिए हमारे यहाँ ऋषि-मुनियों ने ऋषिवर! कहा है कि आनन्द का जो स्त्रोत है, आनन्द को जो प्रदान करने वाला है उसी को हमारे यहाँ महाचैतन्य प्रभु कहा जाता है। जो महान् चेतना को प्रदान करने वाला है और पवित्रता को मानो परणित कर देता है। तो आओ मेरे प्यारे! आज हम उस महामना देव की महिमा का ऋषिवर! गुणगान गाते चलें। हे परमात्मन्! तू कितना उज्ज्वल है और कितना महान् है। तेरी महानता हम गान गाते हैं, तेरी महानता का जब दिग्दर्शन करने लगते हैं, तो हमारे शब्दों में, हमारे कण्ठ में भी कोई शब्द ऐसा नहीं रह जाता है, जो आपके लिए उच्चारण किया जा सके कि आप इतने उज्ज्वल हैं, इतने शक्तिशाली हैं।

क्योंकि आप वाणी की वाणी हैं, श्रोत्रों के भी श्रोत्र हैं। तो हे प्रभु! आप के गर्भ में यह सर्वत्र जगत वशीभूत हो रहा है। तो आपकी महिमा, आपकी उज्ज्वलता का हम कहाँ तक वर्णन कर सकते हैं, परन्तु रहा यह कि आज हमें क्या उच्चारण करना है, हमारा वेदपाठ कहता चला जा रहा है कि मानव को अहिंसा परमोधर्म का पालन करना चाहिये। आज का वेदपाठ हमारे उस विषय में कुछ अपने विचार, अपना ज्ञान मानव के समीप नियुक्त किया जा रहा था, हमारी वाणी से इसका प्रसारण होता चला जा रहा था। वास्तव में वेद अनन्त ज्ञान युक्त है क्योंकि परमात्मा जैसे परमानन्द हैं, आनन्द में भी मानो पूर्ण आनन्द हैं, उसका ज्ञान भी अनन्त है, वह स्वयं भी अनन्त है, इसीलिए बेटा! हम उस परमपिता परमात्मा की महती जो आनन्दमयी ज्ञान युक्त रहती है। वह बेटा! अनन्तता में परणित की गई है।

अहिंसा परमोधर्म दो प्रकार का होता है

आओ मेरे प्यारे! आज हम उस महामना ऋषिवर! उस चैतन्य देव की महिमा का गुणगान गाते हुये, अपने मानवत्व को अहिंसा परमोधर्म की पवित्र वेदी पर ले जायें। हमारे यहाँ दो प्रकार का अहिंसा परमोधर्म होता है, एक तो वह अहिंसा परमोधर्म है, जो मानव अपने आत्मबल के साथ-साथ अपने मन को उज्ज्वल बनाता चला जाता है। जैसा सांख्य वेदाचार्यों ने कहा है, महर्षि कपिल मुनि जी ने, महर्षि गौतम जी ने इसका विश्लेषण किया है। आज मैं उस सम्बन्ध में नहीं जाना चाहता हूँ। मुझे इन वाक्यों को अधिक विश्लेषण नहीं करना है, उच्चारण केवल यह करना है कि हमारा जो जीवन है, मानो वह अहिंसा परमोधर्म में परणित रहता है। अहिंसा परमोधर्म दो प्रकार का होता है, एक वह अहिंसा परमोधर्म है, जो आत्मा से सम्बन्धित होता है, आत्मा के बल से ही सुगठितता होती है, और एक वह है अहिंसा परमोधर्म है, जो राजा से सुगठित रहता है। राजा के विचारों में प्रतिभा बन करके ओत-प्रोत रहती है। मेरे प्यारे! राजा का ऋषिवर! चरित्र बल ऊँचा जिसके द्वारा बेटा! तो वह मानो अहिंसा परमोधर्म में होता है, और चरित्र बल ऊँचा होते हुए वह अपने राष्ट्र को ताड़ना

से नहीं, वह अपनी हिंसा से व्यवस्थित करता है। जिस राजा के राष्ट्र में बेटा! आताताियों को दण्ड दिया जाता है, उसका जो हिंसक विचार है, मानो उस राजा के अनुकूल जिस राजा के राष्ट्र में बेटा! दण्ड दिया जाता हो वह राजा अहिंसा परमोधर्म का पालन कर सकता है। क्योंकि उसके द्वारा धर्म है, धर्म से युक्त नीति है उसको धारण करने का नाम ही बेटा! एक रूप में अहिंसा परमोधर्म की प्रणाली में बेटा! युक्त किया गया है। आज हमारे यहाँ यह विचार आता है कि राजा को भी क्या किसी कारणों से नष्ट कर देना चाहिये। तो मेरा वाक्य यह कह रहा है बेटा! वेद का ऋषि कहता है कि प्राणं ब्रह्मे कृति अस्तु सुप्रजा न ध्यानं प्रजा, वेद का ऋषि कहता है **आत्मा और प्राण किसी काल में हिंसा को प्राप्त नहीं होते।** मानो उसके विचारों में एक शब्द सभ्य विचार आ गये हैं, उन शब्द सभ्य विचारों से दण्डित करना है इसे मृत्यु कहते हैं। वह शब्दार्थों में वह, वास्तव में वह मृत्यु नहीं आती, वह रूपान्तर होता है। तो मेरे प्यारे! आज हमें विचार-विनिमय ऋषिवर! करना है कि हमें दो प्रकार के अहिंसा परमोधर्म को विचार-विनिमय करना होगा। आज जो राजा होता है, वह अपने चरित्र को नष्ट कर लेता है और नष्ट करके प्रजा को अपने आङ्गन में धारण नहीं कर सकता, धर्म के अनुकूल वह राजा हिंसक होता है। मानो उसके द्वारा अहिंसा परमोधर्म नहीं होता। बेटा! जो राजा अपने राष्ट्र में आताताियों को नष्ट करता है, बेटा! वह राजा अहिंसा परमोधर्मी होता है और राष्ट्र पर आक्रमण करने वाला द्वितीय जो आताताियी है उसको वह दण्डित करता है, शूरवीरों से उसको नष्ट कराता है। उसकी महती प्रजा को मानो सेना को नष्ट-भ्रष्ट कर देता है। वह राजा, उस राजा की संसार में सदैव पूजा होती है, जो बेटा! चरित्र से रहता है, अपने क्षत्रिय बल से पवित्र होता है। मेरे प्यारे! उस राजा का संसार में पूजन होता है, उसका आदर किया जाता है ऋषिवर! और जो राष्ट्र केवल कायरता से रहता है, आप भी, क्षत्रिय बल भी पवित्र नहीं है, चरित्र बल भी ऊँचा नहीं हैं बेटा! वह राष्ट्र ऐसे है जैसे बेटा! नौका गङ्गा भंवर में पहुँची है, वह भंवरों में जा करके बेटा! वह ध्वस्त हो जाती है। बेटा! उसका धैर्य नहीं रहता, अधैर्यवान बन जाती है इसी प्रकार वह राजा अपने न्याय और धर्म को, अहिंसा परमोधर्म को

राष्ट्रीय विचारों में ही स्वीकार करता है, उस राजा का राष्ट्र न होने के तुल्य माना गया है। आज नहीं तो वह बेटा! कल नष्ट होने वाला है।

आत्मबल का दिग्दर्शन

आओ मेरे प्यारे! आज का हमारा वेदपाठ क्या कह रहा है ऋषिवर! वेद का आचार्य, वेद का ऋषि कहता है कि वास्तव में हमें अहिंसा परमोधर्म को विचार-विनिमय कर लेना चाहिये। जैसा भगवान् राम ने कहा है–**भगवान् राम ने कहा है कि हमें अपने वास्तविक विचारों को उज्ज्वल बनाना है।** बेटा! जब महाराजा राम संग्राम करने के लिए तत्पर हुए, उस समय रावण अपने नाना प्रकार के आभूषणों से वह युद्ध में जो शृङ्गार होता है, मानो सेनापति का, मानो वह उसको धारण करके, जब राम के सम्मुख आया। मानो ऊँचे रथ पर वह सवार हो करके वह राम से संग्राम करने के लिए आया तो वह विभीषण का आत्मिक बल शान्त होने लगा। जैसे बेटा! सायंकाल को रात्रि छा जाती है, इसी प्रकार अन्धकार, अज्ञानता छा गई। विभीषण जी ने कहा राम से कि हे भगवन्! आप रावण से विजय नहीं पा सकोंगे क्योंकि रावण तो बहुत शक्तिशाली है। परन्तु जब ऐसा शब्द कहा मन ही मन में राम ने कहा कि अरे! यह कायरता कहाँ से आ गई, यह वाक्य दूरी करना चाहिये, त्याग करना चाहिये इसको क्या, आज मेरे द्वारा, वाक्य उच्चारण करूँ। भगवान् राम ने कहा कदापि नहीं विभीषण जो अस्त्र-शस्त्र हैं मुझे उनसे संग्राम करना है, यह जो आभूषण बना हुआ है, यह जो पिण्ड का रथ है यह कुछ समय में देख लेना कि यह कहाँ चला जायेगा, क्योंकि जो युद्ध करने आया है, आत्मा का बल जब उसके सम्मुख नहीं है। उसका बल हीतना को प्राप्त हो जायेगा, क्योंकि चरित्र का बल उसके सम्मुख नहीं हैं। मेरे प्यारे! उस महान् शूरवीर के द्वारा चरित्र भी होता है ऋषिवर! क्षत्रिय बल भी होता है, कर्त्तव्य की वेदना भी होती है, बेटा! वह संग्राम में विजय नहीं होता? भगवान् राम के द्वारा सर्वस्व था इसीलिए भगवान् राम ने कहा कि हमारा जीवन जो है वह धैर्य के आधार पर है, धैर्य हमारा जीवन है। हमें वास्तव में किसी वस्तु को अपनाने से पूर्व कोई विड़म्बना नहीं होनी चाहिये,

जिससे वह विड़म्बना हमारे आत्मिक बल को सूक्ष्म करती चली जाये, हमारा जो दैनिक कार्य है उसको हीनता को प्राप्त करती चली जाये, ऐसा हम नहीं चाहते। भगवान् राम ने जो विभीषण को कहा तो विभीषण मौन हो गया, एक ही वाक्य उन्होंने बेटा! संसार के नाना वाक्य नहीं।

कर्त्तव्य, न्याय ही अहिंसा परमोधर्म

जब भगवान् कृष्ण और महाराजा अर्जुन बेटा! अपने अस्त्रों-शस्त्रों को त्याग करके रथ के पिछले विभाग में विराजमान हो गया था, उस समय भगवान् कृष्ण ने कहा था अरे! अर्जुन तुम इस प्रकार क्यों विराजमान हो गये हो? उन्होंने कहा कि महाराज यह तो सब मेरा कुटुम्ब है, मेरा परिवार है, आज मैं जिसे नष्ट करने चला हूँ। आज मेरे परिवार को ऐसे कार्य में क्यों लगा रहे हैं जिससे मुझे जन्म-जन्मान्तरों तक जिसे भोगना होगा, इस पर भगवान् कृष्ण ने कहा था अरे! अर्जुन यह क्या चर्चा प्रगट करने लगे हो, तुम्हें कर्त्तव्य का पालन नहीं करना है, मानो यही तुम्हारा कर्त्तव्य है कि तुम्हें अपने अस्त्रों-शस्त्रों से नष्ट करना है। आज तुम यह जानते हो क्या यह सब प्राणी मृत्यु के मुखारबिन्दु में जाने हैं और जैसे मृत्यु के मुखारबिन्दु में जा करके इन्हें यहीं आना है। यह तो तुम जानते हो, तो तुम किस कायरता में चले गये हो। आज वह व्यक्ति बेटा! क्षत्रिय वृत्ति को त्याग कायर होता है, जो अपने क्षत्रिय दृष्टि को त्याग करके, और देखो, न्याय और अन्याय को नहीं विचारता, बेटा! वह क्षत्रिय, वह राजा मानो कायरता को प्राप्त हो करके नारकिक बना करता है। उसकी अपकीर्ति होती रहती है मानो कीर्ति नहीं होती, अपकीर्ति का एक रूप बन जाता है।

मेरे प्यारे! जब यह वाक्य उनके मस्तिष्क में आया ऋषिवर! विचार-विनिमय होता रहा, परन्तु अन्त में अर्जुन ने यह कहा कि महाराज! मैं अपने कर्त्तव्य को करने के लिए तत्पर हूँ। तो वाक्य उच्चारण करने का अभिप्रायः यह है कि मानव को वास्तव अहिंसा परमोधर्म को विचारना है, अहिंसा परमोधर्म किसे कहा जाता है।

महर्षि भृगु आश्रम में ऋषि-मुनियों का चिन्तन

अब तुम्हें वास्तविक तत्त्वों की चर्चा मैं प्रगट करूँ तो वास्तव में ईश्वर का अहिंसा परमोधर्म है, मानो ऋषियों का अहिंसा परमोधर्म है–मुझे स्मरण आता रहता है। बेटा! एक समय महर्षि दालभ्य जी ने महाराजा अश्वेति और देखो, सामकेतु आचार्यों से उन्होंने एक वाक्य कहा था, शौनक इत्यादि ऋषियों से कहा कि महाराज हम यह जानना चाहते हैं कि प्रहा (प्रायः) ऋत् किसे कहा जाता है। उस समय महर्षि दालभ्य जी के वचनों को पान करने वाले मुनिवरो! देखो, महर्षि ने कहा कि महाराज! चलो आज महर्षि अत्रि मुनि के आश्रम में चलते हैं। महर्षि अत्रि मुनि के आश्रम में पहुँचे तो बेटा! आश्रम में जा करके अत्रि मुनि महाराज से उन्होंने एक प्रश्न किया कि महाराज हम अहिंसा परमोधर्म के, इसके गर्भ में जो मानो ऋत् विराजमान है उसको जानना चाहते थे। उन्होंने यह कहा कि बहुत सुन्दर, आइए, परन्तु मैं तो इसको जानता नहीं, मैंने इसका अभ्यास नहीं किया है। आगे चलो महर्षि भृगु आश्रम, तुम्हें प्रतीत हो रहा है, भृगु आश्रम में यह तुम्हें सब जानकारी प्राप्त हो सकती है। मेरे प्यारे! वह महर्षि भृगु आश्रम में पहुँचे ऋषिवर! महर्षि भृगु आश्रम में जाते ही, भृगु जी ने उनका बड़ा सुन्दर आदर किया। और सत्कार करते हुए, उनके चरणों को छूते हुए महर्षि दालभ्य इत्यादि ऋषिवर विराजमान हो गये, विराजमान हो जाने के पश्चात् उन्होंने यह प्रश्न किया कि महाराज! हम अहिंसा परमोधर्म को जानना चाहते हैं। उन्होंने कहा कि बहुत सुन्दर, विराजो, तो ऋषि मण्डल विराजमान हो गया और आनन्दवत् पूर्वक उनको प्राप्त हो गया। उन्होंने कहा बेटा! महर्षि भृगु जी ने अपने शिष्य शौनक ऋषि महाराज को प्रश्न किया कि हे शौनक ऋषि! यह वेद का पाठ करो, पठन-पाठन करो। जटा पाठ और घन पाठ में वेदों का, वह वेदों का पाठ प्रारम्भ होने लगा ऋषिवर! मेरे प्यारे! जब उन्होंने बेटा! जटा पाठ में वेदों का पाठ प्रारम्भ किया और ऐसे मधुर स्वरों से वेदों का पठन-पाठन किया कि शान्त (शौनक) ऋषिवर विराजमान हो गये, परन्तु जहाँ शान्त ऋषिवर विराजमान थे, वहाँ हिंसक प्राणी मानो देखो, मृगराज इत्यादि भयङ्कर वन में से भी आ गये, वह भी विराजान हो गये और जैसे ऋषिगण विराजमान थे। ऐसे भी हिंसक प्राणी

बेटा! मृगराज भी विराजमान हो गये। बेटा! विराजमान हो करके, अपनी पंक्तियों में विराजमान हैं हिंसक प्राणी। बेटा! जब वेद का पठन-पाठन प्रारम्भ होता रहा, तो उनके द्वारा आत्मा की पिपासा होती है, आत्मा की तृष्णा में बेटा! व्याकुल होने के पश्चात् उन्होंने ब्रह्मे व्यापा वृत्तं धारम अश्वेति रुद्रो ब्रहो उन्होंने अहिंसा परमोधर्म का जो अध्ययन किया हुआ था ऋषिवर! मेरे प्यारे! अहिंसा परमोधर्मी वही व्यक्ति होता है जो मुनिवरो! देखो अपने आत्मत्त्व को जान लेता है। वह मुनिवरो! एकेश्वर जिसके हृदय में समाहित हो जाता है। तो एकेश्वर विराजमान है, देखो, हिंसक प्राणियों में भी देखो, एक ईश्वर ही विराजमान है।

वाणी से हिंसा न करने की प्रेरणा

आज मानव अपनी वाणी से हिंसा को प्रारम्भ न करो, मानव की वाणी से सबसे प्रथम हिंसा प्रारम्भ हो जाती है। हिंसा क्यों प्रारम्भ होती है? मानव जब कटु शब्दों का प्रतिपादन करता बेटा! उसको हिंसा हो जाती है। मुझे एक वार्त्ता स्मरण आती चली आ रही है इस सम्बन्ध में, देखो मुनिवरो! जब महाराजा युधिष्ठिर ने द्वापर काल में इन्द्रप्रस्थ में यज्ञ किया था तो यज्ञ करने के पश्चात् महाराजा दुर्योधन इत्यादि सभी उस यज्ञ में विराजमान हुए, और विराजमान हो जाने के पश्चात्, महाराज युधिष्ठिर ने कहा कि हे दुर्योधन! हमारे भवन को दृष्टिपात करते जाना, वह सुन्दर कलाकारों से सुगठित है। जब वह गृह का निरीक्षण करने लगे तो महाराजा दुर्योधन वहाँ महान् व्याकुल हो गये जहाँ उन्हें यह प्रतीत होता था कि जहाँ जल है, वहाँ निर्जल था, वहाँ जल नहीं था, जहाँ निर्जल था, वहाँ जल नहीं रहता था, जहाँ जल नहीं, वहाँ जल की धारा प्रतीत होती थी, महाराज दुर्योधन उससे व्याकुल हो गये, कहीं जल में प्रविष्ठ हो जाते थे, कहीं जल से पृथक् हो जाते थे। तो मुनिवरो! देखो, वहाँ महारानी द्रोपदी ने एक वाक्य कहा था कि अन्धों की सन्तान अन्धी ही होती है। एक ही शब्द ने बेटा! वह भयङ्कर अग्नि प्रदीप्त कर दी। तो महाराजा दुर्योधन ने एक वाक्य कहा था कि हे द्रोपदी! मैं जानता हूँ कि मैं मानो तुम्हें एक दिन जनाऊँगा क्या मैं अन्धे का अन्धा हूँ, या तुम अन्धे की अन्धी हो। यह वाक्य उन्हें ऐसा स्थान कर गया था जैसे मुनिवरो! ब्रह्मा अस्ति

सुप्रजा देखो, मानो देखो, आकृतियों में मानव व्याकुल हो जाये, और व्याकुलता को प्राप्त करा दिया जाता है। मेरे प्यारे! इसी शब्द का परिणाम महाभारत जैसा संग्राम हुआ ऋषिवर! यह इसमें बड़े-बड़े महान् वैज्ञानिक नष्ट हो गये थे। तो बेटा! वाक्य उच्चारण करने का अभिप्रायः कि मानव को वाणी से ही हिंसा प्रारम्भ होती है, वाणी से ही हिंसा प्रारम्भ नहीं करनी चाहिये। **मानव को सबसे प्रथम यह विचारना है कि किस शब्द का उच्चारण करना है, इस शब्द का परिणाम क्या होगा बेटा! जो मानव यह, इसे विचार लेता है तो बेटा! वाणी से हिंसा नहीं होती है।** परन्तु वाणी मानव को पवित्र बनाती है।

महर्षि भृगु आश्रम में हिंसक प्राणियों का आगमन

मेरे प्यारे! मैं अहिंसा परमोधर्म की विवेचना कर रहा था ऋषिवर! भृगु ऋषि के आश्रम में आदि ऋषियों का बेटा! गान हो रहा था परन्तु हिंसक प्राणी आ पहुँचे। जब गान समाप्त होने लगा, समाप्त हुआ अहा! तो ऋषि-मुनियों का विचार-विनिमय होने लगा। महर्षि भृगु जी ने कहा कि हे दालभ्य जी! यह विचारों कि यह जो तुम्हें यह जो दृष्टिपात आ रहे हैं। यह मृगराज मानव सभा में विराजमान हैं क्यों, यह मानव का भक्षण कर जाते हैं, मानव को निगल जाते हैं और यह हमारे आश्रम में ऐसे विराजमान हैं, जैसे एक सुन्दर बालक विराजमान होता है। क्यों विराजमान हैं, क्योंकि जो हमारा जो अन्तःकरण है, हमारा जो हृदय है वह इतना विशाल इतना निर्मल हो चुका है क्या उसे हिंसा का कोई विचार ही नहीं हैं क्योंकि भय नाम की कोई वस्तु नहीं रही और जब भयभीत होने वाला कोई अङ्कुर नहीं रहता, तो मानो देखो, अहिंसा परमोधर्म बेटा! परमात्मा सर्वज्ञ है, परमात्मा हिंसक प्राणियों में बेटा! विराजमान होता है। बेटा! देखो, वह हिंसक प्राणी शान्त मुद्रा में विराजमान हैं, कारण यह है कि इनकी आत्मा पिपासा में विराजमान रहती है, आत्मा तो ब्रह्म ज्ञान के लिए विराजमान रहती है।

तत्त्ववेत्ता

मेरे प्यारे! वाक्य उच्चारण करने का अभिप्रायः यह है कि ऋषिवर! मानव को अहिंसा परमोधर्म को विचार-विनिमय करना है, तो मानव को किसी भी

इन्द्रिय से पाप कर्म नहीं करना है। आज हम वाणी से पाप कर्म करते हैं, कहीं चक्षुओं से पाप कर्म करते हैं, कहीं घ्राण से, मानो कर्णों से अशुद्ध शब्द को ग्रहण करते हैं, कहीं कटु शब्दों को श्रवण करते हैं, इन्हीं नेत्रों से देखो, कहीं हम कहीं नाना प्रकार के देखो, नाना प्रकार की अशुद्धियों का प्रतिपादन करते रहते हैं। मानो वह सभी वह एक प्रकार का पाप का मूल बन जाता है। वह मानव के अन्तःकरण को दूषित बनाता हुआ हिंसक बना देता है, और वह अहिंसा परमोधर्म में बहुत शुद्धता की आवश्यकता रहती है। तो मेरे प्यारे! ऋषिवर वाक्य उच्चारण करने का अभिप्रायः क्या है, ऋषि-मुनियों ने कहा है, आचार्यजनों ने कहा है कि आज हम विचार-विनिमय करने वाले बनें। हमारा जो जीवन है वह महानता के आनन्द पर विरामजान है, जहाँ मानव का सुन्दर निर्माण होता है, और अहिंसा परमोधर्म जहाँ विचारा जाता है। वहाँ जहाँ हम अहिंसा परमोधर्म को विचार नहीं पाते हैं, आज बेटा! जो तत्त्ववेत्ता होते हैं, वास्तव में तो अहिंसा परमोधर्म को तो वही जानते हैं। राष्ट्रीय विचारधारा में भी मानो अहिंसा परमोधर्म होता है। तो मेरे प्यारे! एक लौकिक होता है। ऋषिवर! एक पारलौकिक होता है, पारलौकिक वह अहिंसा परमोधर्म होता है जिसका आत्मा बलिष्ठ होता हुआ वह ब्रह्मवेत्ता को, तत्त्ववेत्ता को यह ज्ञान होता है कि मानवता को जानता हुआ होता है। वह वास्तव में बेटा! अहिंसा परमोधर्म को प्राप्त हो जाता है।

ऋषियों के अहिंसा परमोधर्म का दिग्दर्शन

आओ मेरे प्यारे! आज का यह वाक्य हमारा क्या कहता चला जा रहा है ऋषिवर! विचार-विनिमय करना है कि वास्तव में ऋषियों का जो अहिंसा परमोधर्म जो मुक्ति के मार्ग में मुक्ति के निकट जाने वाले हैं, वह बेटा! स्वप्नवत् में भी मानो उनके सम्मुख देखो, किसी प्रकार का भी हिंसक विचार नहीं आता। हिंसक विचार तो बेटा! उनके द्वारा आता है, प्रायः जो बेटा! देखो इन्द्रियों से पाप कर्म करते हैं। जो बेटा! पाँच ज्ञानेन्द्रियों को, पाँच कर्मेन्दियों को अच्छी प्रकार जानते हैं, उनका विश्लेषण जानते हैं, उनका कर्म जानते हैं, उनकी वास्तविकता को जानते हैं, बेटा! वह मानव संसार में देखो किसी भी में काल में

पाप कर्म करने में तत्पर नहीं होते ऋषिवर! तो मेरे प्यारे! वह अहिंसा परमोधर्म की पवित्र वेदी पर विराजमान होते हैं।

मुझे बेटा! स्मरण आता रहता है कि मेरे पूज्यपाद-गुरुदेव के आश्रम में बेटा! शिक्षा अध्ययन के लिए जाते थे। मेरे प्यारे! मुझे आज भी स्मरण आता चला जा रहा है कि लाखों वर्षों का वाक्य है, ऋषि मण्डल लाखों वर्षों का साहित्य है, मुझे उसे पुनरुक्ति करने का सौभाग्य प्राप्त होता रहता है। मुनिवरो! देखो, एक पंक्ति में शिष्यगण विराजमान हैं, द्वितीय पंक्ति में बेटा! मेरी प्यारी माताएँ और तृतीय पंक्ति में बेटा! मृगराज ओत-प्रोत हैं। जब बेटा! सभा विसर्जन होती, तो हम पूज्यपाद-गुरुदेव के चरणों को छूते, तो माताएँ चरणों को छुआ करती, उसके पश्चात् बेटा! मृगराज आ करके बारी-बारी चरणों को छू करके बेटा! अपने आसन पर जाते थे। यह क्या कारण है कि एक समय, मैंने अपने पूज्यपाद-गुरुदेव से वर्णन किया कि प्रभु जो हिंसक प्राणी मानव को निगल जाते हैं, आपके चरणों को छू रहे हैं, आपके चरणों में विराजमान हैं। बेटा! उन्होंने ब्रह्मे अयोध्या चरित्राणि ब्रह्म लोका। हे पुत्र! जैसे कि तुम उच्चारण कर रहे हो उन्होंने कहा हे पुत्र! हमारा यह आश्रम है जिसमें हम विराजमान हैं यह सुन्दर विचारों से भरा है जिसमें तुम विराजमान हो। यह सुन्दर विचारों वाला है जैसे अहिंसा परमोधर्म में इतना परणित हो गया है, इतना महानता में ओत-प्रोत हो गया है कि यहाँ कोई हिंसक नाम का कोई परमाणु नहीं रहा है, हिंसक प्राणी आत्मा की पिपासा के लिये चलते हैं तो अहिंसा परमोधर्म के जो सुन्दर विचार हैं वह आत्मा को छूते हैं परन्तु देखो आत्मा को छूते ही वह हिंसक प्राणी अपने हिंसक भाव को त्याग करके वह जो, वह मुझे स्मरण ऋषिवर! अहिंसा परमोधर्म का पालन करने लगते हैं। मेरे प्यारे! ऋषिवर है क्या हिंसक जब उनके चरणों को छूते तो वह मग्न होते थे। मेरे प्यारे! प्राणी अपनी मानव आप्तो को जानते हैं परन्तु जो हिंसा परमोधर्म को जानता है वह केवल अपनी इन्द्रियों से भी पाप कर्म नहीं करता, वह अहिंसा परमोधर्म प्राणीत्व को प्राप्त हो सकता है, वह अपनी ज्ञानेन्द्रियों और कर्मेन्द्रियों से स्वप्नवत् में भी काम वासना उसके मन में न आये। तो मेरे प्यारे! ऋषिवर मैं इस वाक्य को उच्चारण करता-करता

गम्भीरता में नहीं ले जाना चाहता हूँ। केवल वाक्यों का अभिप्रायः यह है कि आज हमें अपनी मानवता को जानना है, अहिंसा परमोधर्म को जानना है।

आत्मवेत्ता

अहिंसा परमोधर्म है क्या बेटा! मुझे तो संसार को दृष्टिपात करते हुए बहुत समय हुआ, मुनिवरो! देखो, एक वाक्य मुझे स्मरण आता चला जा रहा है, अहिंसा परमोधर्म क्या होता है। जब मानव के उद्गम हृदय के विचार बेटा! होते तो वह हिंसक प्राणी के अन्तःकरण को छू जाते हैं। मुझे स्मरण आता रहता है बेटा! जब माता सीता और भगवान् राम लक्ष्मण बेटा! भयङ्कर वन में चले गये और वह एक समय बेटा! वन में भ्रमण करते हुए रात्रि छा गई। रात्रि में जब विश्राम करने लगे देखो, जब लक्ष्मण और राम भी गाढ़ी निद्रा में विराजमान थे, भगवान् राम भी निद्रा में विराजमान थे, तो बेटा! माता सीता जागरूक थी। जागरूक होने के कारण बेटा! महान् अपनी स्थली पर चिन्तन कर रही थीं, चन्द्रमा बेटा! अपनी कलाओं से युक्त था, चन्द्रमा अपने प्रकाश से युक्त था। इतने में ही बेटा! देखो मुनिवरो! चन्द्रमा के प्रकाश में दृष्टिपात किया कि एक मृगराज आ रहा है और मृगराज को दृष्टिपात करते ही माता सीता ने मन ही मन कहा यह क्या है, हो सकता है क्या यह हिंसक प्राणी मानो यह मृगराज आ रहा है, यह मेरे पतियों को अवश्य नष्ट करेगा। उन्हें अपना आहार बनाएँगा। उस समय यह विचारा कि यदि मैंने इस समय लक्ष्मण को जागरूक किया तो मुझे शोभा नहीं देता, और यदि मैंने अपने पति को जागरूक किया तो वह भी शोभा नहीं देता, क्योंकि पत्नी का धर्म नहीं कहता है कि पति को जागरूक कर देना चाहिये। क्योंकि जब मानव निन्द्रा की अवस्था में होता है उस समय उसका अन्तःकरण परमात्मा से उसका मिलान होता है, क्योंकि निन्द्रा अवस्था में देखो, मन बुद्धि चित्त अहङ्कार यह चारों साम्यवास्था में होते हैं। अन्तःकरण में जा करके यह सुषुप्ति को प्राप्त हो जाते हैं, इसी को बेटा! **साम्यवस्था** कहते हैं। मानो **वह चित्त के द्वारा आत्मा से बल को प्राप्त करते हैं।** इसीलिए यह मन के विचारों से मानो इनके मिलान को नष्ट करना नहीं चाहती हूँ। मैं क्या करूँ, उस समय वह प्रार्थना करने लगी, गायत्री छन्दों का पठन-पाठन

करते हुए माता सीता ने कहा मैं यह जानती हूँ कि हम तेरे राष्ट्र में आये हैं, हे मृगराज! यह जो इतना, कि यह सब तुम्हारा राष्ट्र है। परन्तु तुम्हारे राष्ट्र में वास्तव में आये हैं, भयङ्कर वन है देखो, हम तुम्हारे राष्ट्र में हैं मानो हम निन्द्रा में तल्लीन हैं, मैं ही केवल जागरूक हूँ, हे मृगराज! क्या तू हमें अपना आहार बनाना चाहता है तो यह शोभा नहीं देता। देखो, मुनिवरो! वह जो हृदय अगम्य के जो विचार होते हैं–माता सीता ने कहा हे मृगराज! तू इस मार्ग को त्याग करके, द्वितीय मार्ग को ग्रहण कर। तो कहा जाता है महर्षि वाल्मीकि ने कहा है क्या प्रजास्ति सुप्रजा अश्व अच्यते मानता ब्रहे प्राहस्ते। महर्षि वाल्मीकि ने कहा है कि माता सीता के... करूणामयी वाक्यों को, विचारों को पान करने वाले मृगराज ने बेटा! वह मार्ग ही त्याग दिया, द्वितीय मार्ग को ग्रहण कर गया। मेरे प्यारे! वाक्यों का ऋषिवर! अभिप्रायः यह कि जो मानव आत्मवेत्ता होते हैं, आत्मा में बलिष्ठ होते हैं, आत्मा जिसका उन्नत होता है तो मुनिवरो! देखो, वह मृगराज भी उनके आहार नहीं करते। इसीलिए मेरे प्यारे! ऋषि सब भयङ्कर वनों में ऋषिवर! तपस्या में संलग्न रहते थे।

ऋत् और सत्

मुझे स्मरण आता रहता है कि महर्षि भृगु आश्रम में बेटा–मैं वाक्य उच्चारण कर रहा था कि महर्षि भृगु आश्रम में बेटा! जब ऋषि-मुनियों का विचार-विनिमय चल रहा था कि जब भृगु जी ने कहा था कि यही अहिंसा परमोधर्म है क्या जो स्वप्न में भी हिंसक प्राणी उनके वाक्यों को श्रवण करने के लिए आते हैं, हमारे मनों में वह विचार भी नहीं आ पाता मानो इसीलिए वह सब अपने-अपने मार्ग में स्थिर रहते हैं, **अहिंसा परमोधर्म उसी को कहा जाता है और उसी को ऋत् और सत् कहा जाता है जिसमें ऋत् में सत् होता है उसी को चेतना कहते हैं, वही चेतना बेटा! ईश्वरीय चेतना होती है।** और ईश्वरीय चेतना में कोई हिंसक किसी का भक्षक बेटा! कोई होता ही नहीं।

आत्मउत्थान की प्रेरणा

मेरे प्यारे! इसीलिए तो वह चेतना को जानने के लिए तत्पर होना है ऋषिवर! क्योंकि **आत्मा परमात्मा की चेतना एक रस रहती है इसमें**

परिवर्तन नहीं होता इसमें न्यूनता, अधिकता नहीं होती इसीलिए परमात्मा की चेतना को जानने के लिए सदैव तत्पर रहता है। तो इसीलिए बेटा! मैं आज अधिक विचार प्रगट करने नहीं आया हूँ। आज के वाक्यों का अभिप्रायः यह है कि हम सदैव अपनी आत्म उन्नति के लिए सदैव तत्पर रहें। क्योंकि प्रत्येक मानव, प्रत्येक देव कन्या संसार में अपनी आत्मा का उत्थान करने के लिए आते हैं, यहाँ बेटा! संसार में पाप कर्म करने के लिए नहीं आते हैं। यहाँ विचारक बनने के लिए आते हैं, अपनी आत्मा को उन्नत करने के लिए आत्मा को सुदृढ़ बनाने के लिए आते हैं। यह है बेटा! आज का हमारा वाक्य आज मैं अधिक चर्चा तो प्रगट करने नहीं आया हूँ।

आज के इन वाक्यों का अभिप्रायः यह है कि आज बेटा! हम प्रभु का चिन्तन करते हुए–आज मानव जो अशुद्ध कर्म करता रहेगा। तो इसका अभिप्रायः यह नहीं है कि मानव नहीं भोगेगा। मैं तो यह वाक्य बारम्बार कहा करता हूँ कि मानव की चेतना, मानव का जीवन सुन्दर और धर्मज्ञ होना चाहिये, परन्तु जब मानव यह विचार-विनिमय करने लगते हैं कि जो हमारा हम कर्म कर रहे हैं वह हमें नहीं भोगना होगा, यह मानव की धृष्टता है, यह मानव का केवल अशुद्ध विचार है। बेटा! संसार में मानव अहिंसा परमोधर्मी बन जाओ, हिंसक बन जाओ, परन्तु जो भी तुम कुछ बनोगे जैसा तुम विचार बना लोगे, वैसा ही सङ्कल्प और ऐसा ही देखो, यह संसार प्रभु का जो रचाया हुआ है यह एक प्रकार का कल्पवृक्ष है जैसी भी तुम्हारी कल्पना होगी वैसे ही तुम बनते चले जाओगे।

मानव को स्वतः अपनेपन को विचारने की प्रेरणा

इसके सम्बन्ध में बेटा! एक वार्त्ता मुझे स्मरण आती चली जा रही है–एक समय देवर्षि नारद मुनि संसार में आ पहुँचे। देवर्षि नारद मुनि संसार में विचरते हुए बेटा! वह मृत मण्डल में आये, मृत मण्डल में जब भ्रमण करने लगे, महर्षि नारद मुनि ने यह विचार किया था कि आज मैं किसी प्राणी को स्वर्ग में ले जाना चाहूँगा, जो महा दुखित हो। बेटा! जब देवर्षि नारद मुनि मृत मण्डल में भ्रमण कर रहे थे, भ्रमण करते हुए उन्होंने दृष्टिपात किया प्रातःकाल का समय था, एक

मानव बड़ा दुखित था, उसे प्राप्त किया, नारद जी ने कहा अरे! तुम क्यों कष्ट में हो प्रातःकाल का समय है, इस समय तो सभी प्रसन्न होते हैं। उन्होंने कहा प्रभु! मैं इसीलिए अप्रसन्न हूँ, कष्ट में हूँ, क्या मेरी पत्नी मुझे नित्य प्रति दण्डित करती है। और आज मेरी पत्नी ने मुझे दण्डित किया है, आज मैं कष्ट में हूँ इसीलिए प्रभु! मैं बड़ा दुखित हो रहा हूँ और मैं प्रभु से यह याचना कर रहा हूँ कि हे प्रभु! मेरा प्राणान्त हो जाये। देवर्षि नारद मुनि ने कहा कि अरे! चलो आज मैं, तुम्हें स्वर्ग में ले चलें। तो वह बड़ा प्रसन्न हुआ। तो उसने कहा तो चलिये भगवन्! स्वर्ग के द्वार पर देवर्षि नारद मुनि, दोनों भ्रमण करते हुए बेटा! जा पहुँचे। स्वर्ग के द्वार पर जा करके, नारद मुनि ने कहा भई यह स्वर्ग का द्वार है और स्वर्ग के द्वार पर जो यह कल्पवृक्ष है इसके नीचे विराजमान हो जाओ। और मैं भगवान् विष्णु की आज्ञा ले आऊँ, कि तुम स्वर्ग में जाने योग्य हो अथवा नहीं। बेटा! नारद मुनि ने स्वर्ग में जा करके और वह मानव उस कल्पवृक्ष के नीचे विराजमान हो गये और जब कल्पवृक्ष के नीचे बेटा! विराजमान थे वहाँ मन्द सुगन्ध वायु चली, नाना प्रकार के सुगन्ध वायु ने जब उस मानव को अधिक प्रभावित किया, और आलस्य और प्रमाद में परणित कर दिया तो मनुष्य के मन में कल्पना जागी, अरे! यहाँ तो मेरे लिए सुन्दर आसन होना चाहिये था, अब बेटा! कल्पवृक्ष था कल्पना करते ही सुन्दर आसन हो गया सुन्दर आसन देखो लग गया। कल्पना करते ही जब आसन लग गया तो मुनिवरो! वह उस आसन पर विराजमान हो गया। जब विराजमान हो गया तो बेटा! जब मन्द सुगन्ध वायु ने और अधिक प्रभावित किया उस मानव को तो उसको कल्पना जागी अरे! यहाँ तो एक विश्राम करने वाला आसन होना चाहिये था। अब बेटा! कल्पना की और सुन्दर आसन लग गया। उस आसन पर विराजमान हो गया विश्राम करने लगा। जब विश्राम करने लगा, तो बेटा! उस समय कल्पना जागी, अरे! यहाँ तो नाना प्रकार की अप्सराएँ होनी चाहियें थी सेवा करने के लिए। अब बेटा! उस मनुष्य ने जब कल्पना की तो सुन्दर-सुन्दर अप्सराएँ आ गई और उसकी सेवा करने लगी। जब वह सेवा होने लगी, उस मनुष्य के मन में कल्पना जागी, अरे! यदि वह मृत लोक वाली पत्नी होती तो तेरे पर डण्डा भी

होता। अब बेटा! कल्पना करते ही यहाँ पत्नी जी भी आ पहुँची, जब पत्नी भी दण्डे युक्त हो करके दण्डे सहित बेटा! वह मानव के द्वार पर आ गई। और उस मानव ने दृष्टिपात किया, अरे! यह तो वही पत्नी है। बेटा! आसन तीव्रता से भ्रमण को त्याग करके वह आगे और उसकी पत्नी पीछे-पीछे है बेटा! चलते जा रहे हैं, इतने में देवर्षि नारद मुनि आ पहुँचे। नारद मुनि ने दृष्टिपात किया कि यह क्या रचना रची जा रही है? देखो, वही पत्नी है, वही मानव बड़ा व्याकुल है। देवर्षि नारद ने अपनी दीर्घ वाणी से कहा, अरे! कल्पना को त्याग। उसने, उस मनुष्य ने बेटा! कल्पना को त्यागा, इतने में न पत्नी है, न आसन है और न अप्सराएँ हैं। देवर्षि नारद मुनि बोले कि अरे! महाधूर्त तूने उस कल्पवृक्ष के नीचे विराजमान हो करके नाना प्रकार के भोग विलासों की कल्पना की, अरे! यदि तू स्वर्ग में जाने की कल्पना करता तो तुझे आज स्वर्ग प्राप्त हो जाता। आज तूने यह क्या कल्पना की है, महाधूर्त। गुरुओं ने मेरे प्यारे! यह कहा कि वाक्य प्रगट हुआ—वाक्य उच्चारण करने का अभिप्रायः यह है कि बेटा! आज मानव को स्वतः अपनत्व को विचारना होगा। यह जो संसार है, जो एक प्रकार का कल्पवृक्ष है, यहाँ मानव जैसी भी कल्पना करने लगता है वैसा ही बन जाता है, उसी प्रकार देखो उसको मानो त्रास दे जाते हैं। तो बेटा! वाक्य उच्चारण करने का अभिप्रायः यह है कि यह संसार एक प्रकार का कल्पवृक्ष है, कल्पना करो, सुन्दर करो, यथार्थ करो, विचित्र करो जिससे तुम महान् बन जाओ। ऐसी कल्पना न करो जिससे तुम अधोगति को प्राप्त होते चले जाओ और मिथ्यावाद में रमण करते चले जाओ। यह है बेटा! आज का हमारा वाक्। आज के वाक्यों का अभिप्रायः कि जो मानव अहिंसा परमोधर्म की कल्पना करता है, वही अहिंसा परमोधर्म बन जाता है। बेटा! जो हिंसक कल्पना करता है, तो हिंसक बनता चला जाता है। तो इसीलिए वेद का ऋषि कहता है वक्रताम् असुतां आभा चरितं ब्रह्मे। वेद का ऋषि कहता है कि मानव को तो कल्पना करनी ही है परन्तु अशुद्ध कल्पना क्यों करते हो, शुद्ध कल्पना क्यों न करो जिससे तुम्हारा कल्याण होता चले जाये। यह है बेटा! आज का वाक्। आज का वाक्य अब समाप्त होने जा रहा है, बेटा! कल समय मिलेगा हम शेष चर्चाएँ हम कल प्रगट करेंगे।

आज के वाक्यों का अभिप्रायः केवल यह है कि हमें अपनी वाणी को तो ऊँचा बनाना है, पवित्र बनाना है। संसार में ऊँची से ऊँची से कल्पना करनी है। आओ हम हिंसक प्राणियों को, हम अहिंसा परमोधर्म में परिवर्तित करना है यह आज का वाक्। राष्ट्रवाद को अहिंसा परमोधर्म को विचारना है, जो आतातायी प्राणी होते हैं, राजा का कर्त्तव्य है उसका अहिंसा परमोधर्म उसी में है उनको यथाशक्ति दण्डित करना चाहिये, जिससे आतातायी प्राणी मानो मेरी पुत्रियों के शृङ्गार को भ्रष्ट न कर जाये, क्योंकि यह राष्ट्र के लिए बड़ा एक महा कलङ्क हो जाते हैं। यह आज का वाक्य अब हमारा समाप्त होने जा रहा है। अब आज का वाक्य समाप्त, समय मिलेगा तो बेटा! शेष चर्चाएँ कल प्रगट करेंगे।

ओ३म् मधु माणां माणु ग्राहणं दधि आभाः इदं रेवं रथां माणां।

ओ३म् देवं मया ग्रणा गृह वन्धना आभा मनु ग्राहण रधि आभ्यां गताः माणाः वन्धनाः प्राची सर्वा गतं मयाः।

ओ३म् ब्रह्म मणाः व्यापं रयियों भद्र दधिमां सर्वा स्वरं ब्रह्मणा।

दिनाँक : 4 मई, 1969

नम्र-निवेदन

पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज ने अपने प्रवचनों में वेद मन्त्रों का गान करते हुए उनकी प्रचलित भाषा में व्याख्या की है। उसी अमृत वाणी को जनकल्याण के लिए ''सँहिता'' रूप में प्रकाशित करने के लिए वैदिक अनुसन्धान समिति सभी श्रद्धालु एवम् दानदाताओं से सहयोग के लिए आह्वान करती है जिससे कि प्रकाशन का कार्य सुचारू रूप से ऊर्ध्वा गति को निरन्तर प्राप्त होता रहे। सहयोग की राशि समिति के बैंक खाते में स्वेच्छानुसार भेजने के लिए बैंक का विवरण निम्न प्रकार से है–

वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.) PAN No. – AAAAV7866J
पंजाब नैशनल बैंक, खान मार्केट, नई दिल्ली
बैंक खाता नं. 0149000100229389, IFS Code - PUNB 0014900

शृङ्गीऋषि वेबसाईट

Website : www.shringirishi.in
Email : contact@shringirishi.in

॥ ओ३म् ॥

विष्णु

जीते रहो!

देखो मुनिवरो! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भाँति कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेद मन्त्रों का पठन-पाठन किया। हमारे यहाँ परम्परागतों के आधारित, कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का प्रसारण होता रहता है। परन्तु वेद मन्त्रों के उच्चारण करने के नाना प्रकार होने के नाते, उनकी नाना प्रकार की धाराएँ बन जाती हैं जिससे हम यह जान लेते हैं कि हमारी जो अमूल्य धाराएँ हैं अथवा वेद का जो उच्चारण करने का जो प्रकार है, वह नाना रूपों में प्रायः परणित होता रहता है। तो आज हम उस परमपिता परमात्मा देव की महिमा का गुणगान गाते हुए चले जा रहे थे जो परमपिता परमात्मा हमारा विष्णु है। वास्तव में कल्याण करने वाला है। प्रत्येक मानव को जीवन अथवा महानता को परणित करने वाला है। जब हम विष्णु के ऊपर अपना विचार, अपनी अमूल्य धाराओं को जब परणित करते हैं तो हमें ऐसा प्रतीत होने लगता है, जैसे हम परमपिता परमात्मा के ही आङ्गन में ही विराजमान हों। क्योंकि वह परमपिता परमात्मा सर्व संसार का पालन करने वाला होने के नाते–क्योंकि परमात्मा की महिमा का गुणगान गाने का प्रायः हमें समय प्राप्त होता रहता है। और जब उसकी महिमा का गुणगान गाते हुए, हम सदैव तत्पर रहते हैं तो हमारे द्वारा अभिमान की मात्र उत्पन्न नहीं होती। जैसा हमने कल के वाक्यों में वर्णन करते हुए कहा था कि वह जो विष्णु का स्मरण करने वाला प्राणी होता है उस मानव के हृदय में नम्रता सदैव विराजमान रहती है। परन्तु जब नम्रता के विशेष अंङ्कुर होते हैं नम्रता ही जीवन है ऐसा पूर्व काल में प्रकट करते हुए कहा है। आज का हमारा वेद पाठ क्या कहता चला जा रहा है, आज के हमारे वेद मन्त्रों का कुछ वाक्य, उनकी प्रतिभा आज हमें उच्चारण करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है।

विष्णु के स्वरूप

आओ, मेरे प्यारे! आज तुम्हें विष्णु बनाने की एक कल्पना करने के लिए ऋषिवर! तत्पर होते चले जा रहे हैं। वास्तव में मानव को विष्णु बनना ही चाहिए। क्योंकि जब प्रत्येक मानव विष्णु की कल्पना करता है अथवा विष्णु का चिन्तन करता है, तो यह भी विचार-विनिमय करना है कि विष्णु है क्या? हम यहाँ वेदों के नाना प्रकार के शब्दार्थों में, उनकी उच्चारण करने की नाना परम्पराओं में ऐसा स्वीकार किया गया है कि विष्णु नाम परमात्मा को कहा जाता है जो संसार का रक्षक है, शुद्ध बुद्ध है। परन्तु देखो, जो नियन्ता है, जो सर्व विश्व को नियन्त्रण में करने वाला है उसी को विष्णु कहा जाता है। परन्तु यहाँ जब वेद के और भी नाना शब्दार्थों को विचार-विनिमय किया जाता है, तो विचार आता है, क्या विष्णु नाम आत्मा को भी कहा गया है क्योंकि यह जो आत्मा है, जब तक मानव के शरीर में यह आत्मा प्रकाशमान रहता है, स्थिर रहता है तभी तक मानव का जीवन तत्पर रहता है, जैसा हमने कल के वाक्यों में, इससे पूर्व वाक्यों में प्रकट कराते हुए कहा था, कि मानव का जो वास्तविक प्रकाश है, मानव जो क्रियाशील हो रहा है, नाना इन्द्रियों से कार्य कर रहा है वह सब आत्मा की देन है। मुनिवरो! देखो देवता इन्द्रियों का कोई भी बन सकता है परन्तु वास्तव में मूल धारा से, जब हम यह विचार-विनिमय करते हैं कि यह जो हमारा शरीर रूपी जो एक राष्ट्र है, शरीर की जो प्रतिभा है, इसका नियन्ता कौन है। तो विचार आता है, कि इसका नियन्ता आत्मा है, जैसा महर्षि याज्ञवल्क्य जी ने कहा है, परन्तु राजा जनक सम्राट ने भी इसका बड़ी, महान् गम्भीरता से विचार-विनिमय किया है। विचार-विनिमय करते हुए देखो, सम्राट जनक ने कहा है, कि रुतीहि प्रव्हा स्वस्ति यागां ब्रह्मे आत्मा, मानो यह जो आत्मा है ये वास्तव में ब्रह्म का स्वरूप माना गया है। क्योंकि इसी के आश्रित हमारा मानव जीवन क्रीड़ा कर रहा है, इसी के आश्रित है। महाराजा जनक ने, जब याज्ञवल्क्य मुनि महाराज से नाना प्रकार के प्रश्न किये, तो उन्होंने यही उत्तर दिया कि आत्मा विष्णु है। जैसे विष्णु परमात्मा को कहते हैं, परन्तु वह नियन्ता है इसी प्रकार

हमारे मानव शरीर में जो एक राष्ट्र है, मानो देखो, यहाँ मन्त्री हैं, उप-मन्त्री हैं नाना प्रकार की जब हम कल्पना करते हैं, तो उससे हमें यही प्रतीत होता है।

मानव शरीर

मेरे प्यारे! प्रभु ने जब ऋषिवर! इस मानव शरीर की रचना की, तो मानव के शरीर में भिन्न-भिन्न प्रकार के विभाग बनाएँ, उसमें मुनिवरो! कहीं प्रसारण करने का विभाग है, कहीं आकुञ्चन एकत्रित करने का विभाग है, कहीं मुनिवरो! उसको अच्छी प्रकार मन्थन करने के नाना प्रकार के विभाग स्वीकार किये गये हैं। तो मेरे प्यारे! महर्षि कपिल मुनि जी के ऋषिवर! आदेशों पर जाते हैं तो महर्षि कपिल मुनि जी ने कहा है कि हमारा जो यह मानव शरीर है, यह एक प्रकार का सूक्ष्म-सा राष्ट्र है, क्योंकि इसमें जैसे मानो पाँच प्राण हैं। पाँचों प्राण अपना सञ्चारु रूप से कार्य करते हैं। पाँचों प्राण मुनिवरो! देखो, किसी में सूचना केन्द्र है, किसी में आज्ञा चक्र है, नाना प्रकार के मुनिवरो! देखो, इसमें कहीं निगलने की शक्ति है, कहीं प्रसारण करने की शक्ति है–इस मानव शरीर को हमारे यहाँ बेटा! यन्त्रालय कहा है। इसको हमारे यहाँ यन्त्रालय कहा है क्योंकि सूक्ष्म-सूक्ष्म तरङ्गों को यह मानव शरीर में, ऐसे-ऐसे सुन्दर यन्त्रों को निर्धारित किये हैं उस देव ने, क्या उन तरङ्गों को आकर्षित और ग्रहण करते रहते हैं। मेरे प्यारे! आज एक मानव वैज्ञानिक क्षेत्र में चला जाता है। परन्तु विज्ञान में ऋषिवर! जब जाता है, वह यह विचारता है कि सूर्य की किरणों में कितनी तरङ्गें होती हैं। मानो यह भी विचारता है कि चन्द्रमा की कान्ति में कितनी तरङ्गें होती हैं, उन तरङ्गों का अनुभव करता है। परन्तु वह कहाँ से अनुभव करता है?

व्यान प्राण

विचार आता है, कि हमारे कण्ठ में बैठा हुआ, मुनिवरो! जिसको व्यान प्राण कहते हैं, व्यान प्राण में यह शक्ति होती है कि हमारे मस्तिष्क में जो नाना प्रकार के यन्त्र हैं जिसको **स्वाधिष्ट** नाम का, जिसको हमारे यहाँ नाना प्रकार के मस्तिष्कों से भी सम्बोधित किया गया है। जैसा कपिल मुनि जी ने कहा है, कि मानव के शरीर में एक मस्तिष्क होता है, द्वितीय लघु मस्तिष्क होता है परन्तु

लघु मस्तिष्क के पिछले विभाग में, **सामुग्री** नाम का मस्तिष्क होता है, जिसको हमारे यहाँ ब्रह्मरन्ध्र भी कहा जाता है। परन्तु उसमें नाना प्रकार की जो नस नाड़ियाँ हैं उन नस नाड़ियों में बेटा! वह तरङ्गें मानो ब्रह्मरन्ध में एक यन्त्र होता है, जिस यन्त्र को हमारे यहाँ **स्वाधागृतिक** नाम का यन्त्र कहा जाता है। परन्तु उस यन्त्र में ये विशेषता होती है कि वायुमण्डल में चन्द्रमा की कान्ति रमण कर रही है और यहाँ और भी नाना शब्द रमण कर रहे हैं, मानो उस शब्द को ग्रहण करने की शक्ति होती है। उस यन्त्र में स्वाभाविकत्व मानो नाना प्रकार की वायुमण्डल में वाणी भ्रमण करती रहती है, उस वाणी को यन्त्र स्वतः ही ग्रहण करता रहता है, परन्तु देखो, वाणी के द्वारा उसका प्रसारण भी हो जाता है, तो यह कितना कार्य व्यान प्राण का है। व्यान हमारे यहाँ बेटा! देखो, जो सूचना केन्द्र है, जो सूचना आती है अथवा चन्द्रमा से आओ, सूर्य से आओ, उसका ज्ञान हो जाओ, परन्तु बृहस्पति से आओ और आरुणि मण्डल से आओ, बृहस्पति और जेठाय नक्षत्र से आओ, परन्तु वह जो तरङ्गें है अथवा बुध से भी आये अथवा मङ्गल से भी आ सकती हैं, परन्तु उनको जो सम्बोधित करने वाला है, उनका जितना चरण है, क्योंकि केवल आज हम यह स्वीकार करें, कि व्यान प्राण में ही ज्ञान होता है। व्यान प्राण ज्ञान, प्राण ज्ञान का सूचक नहीं होता, क्योंकि व्यान प्राण की जितनी गति होती है, उसके पिछले विभाग में जो मनीराम विराजमान है, वह मन से उसका ज्ञान होता है। और आज्ञा देने वाला, निर्णय देने वाला मुनिवरो! प्रसारण शक्ति के द्वारा वह जो व्यान प्राण है, वह प्रसारण करने वाला है, तो हमारे इस मानव शरीर में बेटा! यह जो व्यान प्राण है, यह इतना शक्तिशाली है, जिसके ऊपर मानव बहुत कुछ विचार-विनिमय कर सकता है। परन्तु मैं इस वाक्य को गम्भीर नहीं बनाने जाऊँगा। वाक्यों का अभिप्रायः यह है, क्या जितना भी विज्ञानवाद है, बेटा! जैसे बुद्धि, मेधा, मेधावी का केन्द्र, मुनिवरो! देखो, इस व्यान प्राण के साथ हो जाता है।

चार प्रकार की बुद्धि

हमारे यहाँ बुद्धि की भी नाना प्रकार की धाराएँ स्वीकार की गई हैं। जैसे बुद्धि है, मेधा है, ऋतम्भरा है और प्रज्ञावी ये चार प्रकार की बुद्धियों का विवरण

हमारे यहाँ दर्शनकारों ने कहा है, परन्तु मैं अधिक दर्शनों में नहीं जाना चाहता हूँ। वाक्यों का अभिप्रायः यह है कि आज हम इस मस्तिष्क को, लघु मस्तिष्क को और आगे चल करके, जो ब्रह्मरन्ध है, ब्रह्मरन्ध में जो यन्त्र हैं उन यन्त्रों को जानना, यह महान् वैज्ञानिकों का प्रायः कर्त्तव्य होता है। यह उनके जान लेने के पश्चात् बेटा! वायुमण्डल में जो तरङ्गें रमण करती रहती हैं, मानो उन तरङ्गों में जो शब्द होते हैं, उन तरङ्गों में जिस प्रकार के परमाणु होते हैं उन परमाणुओं को एकत्रित करने की बेटा! उनमें क्षमता हो जाती है।

मेरे प्यारे! आज का हमारा यह वाक्य क्या कहता चला जा रहा था ऋषिवर! वाक्यों का अभिप्रायः यह कि हमारा यह जो मानव शरीर है, यह प्रभु ने ऐसा यन्त्रालय बनाया है, क्या इसमें नाना प्रकार के यन्त्र हैं, इसके निचरले विभाग में बेटा! जैसे व्यान है। उसके निचरले विभाग में उदान प्राण रहता है।

उदान प्राण

मुनिवरो! देखो, यह जो उदान है, यह उदान का कार्य करता है बेटा! एकत्रित कर लेता है, जितना द्रव्य आता है उस सबको एकत्रित करता है और एकत्रित करके बेटा! उसको अग्नि के साथ सम्मिलित होता हुआ मानो देखो, उस उदान देखो, जो भी हम कुछ अन्न इत्यादि पान करते हैं व्यान से लेते हैं उन सबका रस बना देता है, रस बना करके, उस रस को एकत्रित कर देता है। परन्तु वह दूसरा जो मन्त्री मानव के शरीर में विराजमान है, जिसे हमारे यहाँ बेटा! देखो, सामान्य प्राण कहा जाता है वह सामान्य प्राण को अर्पित कर दिया जाता है। वह सामान्य प्राण जब उसे अर्पित कर देता है तो बेटा! मानव के शरीर में बहत्तर करोड़, बहत्तर लाख, दस हजार दौ सौ दो नाड़ी कहलाती हैं। बेटा! उन सब नाड़ियों में वह सब रस ओत-प्रोत होता चला जाता है, अपने द्वारा उसे संग्रह करने की प्रवृत्ति नहीं होती।

अपान प्राण

मेरे प्यारे! भगवान् मनु ने कहा है ऋषिवर! भगवान् मनु ने भी नहीं, परन्तु

महर्षि पिप्पलाद जी ने यह कहा और कपिल मुनि जी ने भी कहा है कि जब मानव के शरीर में कोई भी प्राण, यदि उसे एकत्रित करने की प्रवृत्ति हो जाएगी, तो जानो कि शरीर रुग्ण होता चला जाएगा। शरीर में नाना प्रकार के दोषारोपण होने लगेंगे। इसी प्रकार आगे चल करके बेटा! अपान होता है, परन्तु अपान क्या कार्य करता है, जो भी रस प्रदान किया जाता है, परन्तु वह जो रस है, उस रस में से भी गन्दगी उत्पन्न होती है, परन्तु त्याग का कार्य करता है, वह उसको अप्रेत कार्य करता है, परन्तु उसको त्यागने का, ये त्याग प्रवृत्ति उसमें आ जाती है। अपान का सम्बन्ध पृथ्वी से होता है, पृथ्वी के नाना प्रकार के परमाणुओं को ग्रहण करना और गन्ध, दुर्गन्ध को त्यागना बेटा! यह सब कार्य अपान का हो जाता है, तो यह मन्त्री हमारे इस मानव शरीर में निर्धारित किया है।

प्राण

आगे चल करके बेटा! प्राण रह जाता है, जिसकी सर्वप्रथम व्याख्या हमारे आती है। मुनिवरो! देखो, यह जो प्राण है, यह नाभि केन्द्र से ले करके और घ्राण तक बेटा! इसका साम्राज्य रहता है, मानो उसका राज रहता है। मानो जब यह भ्रमण करता है, मानो नाभि केन्द्र से चलता है, नाभि केन्द्र में एक यन्त्र होता है, जिसको **गृहीताम् प्रतिक** नाम का यन्त्र कहते हैं बेटा! यह जो यन्त्र है, उसमें यह है, क्या वह परमाणु लाता है, प्राण को अर्पित कर देता है। बेटा! अरबों खरबों परमाणु आते हैं श्वास के द्वारा, एक-एक श्वास के द्वारा प्रसारण हो जाते हैं, वायुमण्डल में मिश्रित हो जाते हैं और इसी प्रकार वह अरबों खरबों परमाणु जाते हैं, वह शरीर में जाते हैं प्राण के द्वारा, ये इसी प्रकार का आवागमन है। मुनिवरो! देखो, यह भिन्न-भिन्न प्रकार यह साम्राज्य अपने-अपने विभाग में सब तत्पर रहते हैं। परन्तु देखो, इनको सुगठित करने वाला कौन है? वेद कहता है, कपिल मुनि जी ने कहा, जब कपिल मुनि जी से अति प्रश्न होने लगे, तो कपिल मुनि जी ने कहा कि इन सब प्राणों को सुगठित करने वाले प्राण होते हैं, जिनको उप-प्राण कहते हैं, जैसे नाग है, देवदत्त है, धनञ्जय है, कुरू है, कृकल है, इनको उप-प्राण कहा जाता है, उप-मन्त्रालय कहा जाता है। परन्तु आगे चल करके

कपिल मुनि जी से कहा कि महाराज! हम यह जानना चाहते हैं, महर्षि कृतकृति ने कहा था कि महाराज! हम यह जानना चाहते हैं कि यह जब यह उप-प्राण बन गये, इनको नियन्त्रण में करने वाला कौन है? तो वेद के आचार्यों ने कहा है कि इन सबको नियन्त्रण में करने वाला मुनिवरो! एक पवित्र आत्मा कहलाया जाता है।

आत्मवेत्ता

मेरे प्यारे! आज हमें ऋषिवर आत्मा के लिए बहुत ही बल देना है, क्योंकि आत्मा को जानने वाला प्राणी, बेटा! संसार में निराशा को प्राप्त नहीं होता। आत्मवेत्ता यदि राजा के राष्ट्र में बेटा! ब्राह्मण जितने आत्मवेत्ता होते हैं, उतना राष्ट्र पवित्र होता है। राजा स्वयं आत्मवेत्ता होता है, ब्रह्मज्ञानी होता है बेटा! वह प्रजा के वैभव को संग्रह करने की प्रवृत्ति, उसमें कदापि नहीं आती। ऐसा वेद का वचन कहता है, भगवान् मनु जी ने कहा है, परन्तु मैं महर्षि कपिल मुनि जी के शब्दार्थों का कुछ विवरण करता चला जा रहा था। महर्षि कपिल मुनि जी को हमारे यहाँ नास्तिकवादों में माना जाता है। कपिल मुनि जी ने तो एक समय यह कहा है, क्या मैं प्राण और मन के, दो ही प्रक्रिया संसार में स्वीकार करता हूँ। परन्तु मैं, ईश्वर को स्वीकार नहीं करता। जब मुनिवरो! देखो, आचार्यों ने, ऋषि-मुनियों ने यह कहा कि महाराज आप यह क्या उच्चारण कर रहे हैं। उनके गुरु ने कहा, क्या तुम तपस्या करो, क्योंकि तपस्या करने के पश्चात्, मानव में आस्तिकवाद की प्रवृत्ति आया करती है। प्रायः संसार में ऐसा ही होता है। महर्षि कपिल मुनि जी ने भिन्न-भिन्न प्रकार की तपस्या करने के पश्चात्, उनके जीवन की धारा अमृत में जाने के पश्चात् बेटा! तब उन्होंने नेति-नेति का शब्द उच्चारण किया।

मेरे प्यारे! ऋषिवर आज मैं इस वाक्य में नहीं जाना चाहता था। वाक्यों का अभिप्रायः क्या है, आज मैं विष्णु के आदेशों पर जा रहा था। हमारे यहाँ आत्मा को विष्णु कहा जाता है, जैसे परमपिता परमात्मा को विष्णु कहते हैं, इसी प्रकार आत्मा का नाम भी विष्णु है। हे आत्मा! तू पवित्रता में रमण करने वाला है, भग्रम् ब्रह्मणे माम भवति सुप्रजा मुनिवरो! जैसे वेद के आचार्यों ने कहा है,

जैसे आत्मा विष्णु है, इसी प्रकार परमपिता परमात्मा है, और जैसे परमात्मा है, विष्णु नाम पर्यायवाची शब्दों में बेटा! राजा को भी विष्णु कहा जाता है। परन्तु साधारण शब्दों में ऐसे कहा जाता है कि उस राजा को विष्णु कहते हैं, जिस राजा के राष्ट्र में पवित्रता होती है, साधन होते हैं, मानवता का सदैव प्रसारण होता रहता है।

भगवान् राम को विष्णु बनने की प्रेरणा

मेरे प्यारे! मुझे स्मरण आता रहता है ऋषिवर! त्रेता के काल का समय। त्रेता के काल में बेटा! जब भगवान् राम मुनिवरो! बाल्यकाल में महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज के द्वारा, शिक्षा अध्ययन करते थे। उस समय, एक समय भगवान् राम मध्यम रात्रि में वशिष्ठ मुनि के द्वारा जा पहुँचे, और उनके चरणों को स्पर्श करके बोले कि प्रभु! मैं यह जानना चाहता हूँ कि मेरे पिता तो ऐश्वर्यवादी बन गये हैं, परन्तु मैं यह चाहता हूँ, मेरे हृदय की वेदना है, क्या मैं अपने राष्ट्र को पवित्र बनाना चाहता हूँ, महान् बनाना चाहता हूँ। मुनिवरो! उन्होंने, महर्षि वशिष्ठ जी ने कहा, बहुत सुन्दर, मुझे बड़ी प्रसन्नता है, परन्तु तुम्हारी इच्छा क्या है? उन्होंने कहा कि मैं अपने राष्ट्र को राम-राज्य बनाना चाहता हूँ। यहाँ प्रत्येक मानव में महान् धार्मिकता, सदाचार की पवित्रता होनी चाहिए। उस समय भगवान् राम के आदेशों को पान करने वाले, महर्षि वशिष्ठ मुनि ने कहा था हे पुत्र! आज तुम अपने राष्ट्र में ऊँची कल्पना चाहते हो, तो मेरी इच्छा यह है, क्या तुम विष्णु की कल्पना करो, तुम्हें स्वयं विष्णु बनना होगा, यदि तुम विष्णु नहीं बनोंगे, तो तुम्हारा राष्ट्र किसी काल में उन्नत नहीं हो सकेगा। उन्होंने कहा भगवन्! मैं उसकी मीमांसा चाहता हूँ। तो ऋषि ने उसकी मीमांसा करते हुए कहा है, क्या हे राजन्! तुम्हारे राष्ट्र में हे राम! देखो, तुम्हारे मानो देखो, चार भुज होने चाहिए। सबसे प्रथम, क्योंकि विष्णु के भुजों में, विष्णु के चार भुज होते हैं, प्रथम भुज में मानो देखो, पदम् होता है, द्वितीय भुज में गदा होती है, तृतीय भुज में चक्र होता है और चतुर्थ में शङ्ख कहलाया जाता है। आज तुम अपने चार भुज बनाओ उसके पश्चात् तुम अपने को राम राज की स्थापना कर सकते हो समाज में।

पदम्

भगवान् राम ने कहा भगवन्! मैं आज इस पदम् की मींमासा चाहता हूँ। उन्होंने कहा कि पदम् की मीमांसा यह है कि **पदम् नाम है सदाचार का और शिष्टाचार का,** जिस राजा के राष्ट्र में सदाचार, शिष्टाचार होता है, उस राजा का राष्ट्र वास्तव में पवित्र होता है। क्योंकि सदाचार ही, शिष्टाचार ही, जहाँ सदाचार की परम्पराओं से सुगठित जहाँ मानवता होती है, और शिष्टाचार जहाँ वाणी उच्चारण करने में सत्यवाद होता है, मानवीयता उसमें छल कपट नहीं होता, मानो देखो, उस राजा का राष्ट्र पवित्र हुआ करता है। हे राम! तुम्हारे यहाँ तुम्हें सबसे प्रथम देखो, इस पदम् को अपनाना होगा, क्योंकि पदम् को अपनाने से ही आज कोई भी राजा, यदि महान् बनना चाहता है, बिना पदम् को अपनाये कोई राजा महान् नहीं बनता है। राम! इसीलिए मैं तुम्हें आज्ञा देता हूँ, क्या तुम पदम् को अपनाओ। पदम् नाम है सदाचार, शिष्टाचार, मानवता का क्योंकि जहाँ मानवता में पवित्रवाद होता है, गुरु शिष्य में प्रीति होती है। केवल देखो, जहाँ छात्र बल पवित्र होता है, आचार्यजन पवित्र होते हैं मुनिवरो! देखो, उस राजा के राष्ट्र में वास्तव में सदाचार की पवित्रता ओत-प्रोत हो जाती है।

गदा

इसके पश्चात् वशिष्ठ जी ने कहा हे राम! द्वितीय भुज में तुम्हारे में गदा होनी चाहिए। **गदा नाम है राजा के राष्ट्र में किसी प्रकार का अपराधी नहीं रहना चाहिए।** आज जो तुम्हारी मानवता को, तुम्हारे राष्ट्र में किसी प्रकार की हानि पहुँचाता है, तो गदा से उसको प्रहार कर दो, उसे नष्ट कर दो। यहाँ भगवान् मनु जी कहते हैं, कि राजा के राष्ट्र का जब निर्माण होता है तो निर्माण इसीलिए होता है, जहाँ सदाचारियों की रक्षा होती है और दुराचारी को दण्डित किया जाता है। उस राजा के राष्ट्र में पवित्रवाद हुआ करता है। तो मेरे प्यारे! भगवान् राम से ऋषिवर! महर्षि वशिष्ठ जी ने कहा था, कि हे राम! आज तुम अपने को राम राजवेत्ता बनाना चाहते हो, तो मेरी तो यह कल्पना है, यह इच्छा है क्या तुम स्वयं राष्ट्रवेत्ता बनो, परन्तु बनोंगे कैसे जब तक विष्णु नहीं बनोंगे?

राजा के राष्ट्र में क्षत्रिय पवित्र होने चाहियें और देखो, दण्डे सहित होने चाहियें, गदा होनी चाहिये। गदा नाम है नाना प्रकार के अस्त्रों-शस्त्रों का, जिससे हर प्रकार से दुराचारी मानव को दण्डित कर सको, ऐसे तुम्हारे यहाँ यन्त्र होने चाहिये। तो मेरे प्यारे! भगवान् राम ने उस वाक्य को स्वीकार कर लिया। ऋषिवर! स्वीकार करते हुए कहा प्रभु वास्तव में यह वाक्य तो मुझे बहुत ही प्यारा प्रतीत हो रहा है, क्या वास्तव में, मैं प्रयत्न करूँगा जीवन भर यदि मैं राजा बना, क्या मेरे राष्ट्र में क्षत्रिय पवित्र होने चाहिये।

राजा के राष्ट्र में शत्रु कौन होता है? मुनिवरो! देखो, राजा के राष्ट्र में वह शत्रु होता है, जो राष्ट्र को दुराचार से कलङ्कित करना चाहता है, वह राजा के राष्ट्र में सबसे प्रथम दोषी होता है। तो मुनिवरो! भगवान् राम को वशिष्ठ ने कहा है कि हे राम! तुम्हारे राष्ट्र में क्षत्रिय होने चाहियें। बलिष्ठ और बलवान, ब्रह्मचारी होने चाहियें जिससे तुम्हारा राष्ट्र सदाचार की पवित्र वेदी पर भ्रमण कर सके। मानो प्रक्रियाएँ मानव के मस्तिष्क में सुन्दर हों, यहाँ मेधावी पुरुष होने चाहिये और विज्ञान पराकाष्ठा पर होना चाहिए। ज्ञान और विज्ञान की जहाँ मात्रा होती है, आत्मिकवेत्ता पुरुष होते हैं, उस राजा के राष्ट्र में सदाचार और वहाँ दुराचार नहीं होता, क्योंकि **राष्ट्र का निर्माण जब भी होता है, किसी भी काल में होता है, वह इसलिए हुआ करता है कि सज्जनों की सेवा, सज्जनों की रक्षा और दुराचारियों को दण्डित करने के लिये।**

चक्र

मेरे प्यारे! महर्षि वशिष्ठ ने कहा है ऋषिवर! कि देखो, आज तुम्हारा दो चरण है, राजा के दो चरण हो चुके हैं, क्योंकि चारों चरणों वाला राजा कहलाया जाता है और तृतीय चरण तुम्हारा है चक्र का। चक्र नाम है, मानो देखो, राजा के राष्ट्र में संस्कृति का, क्योंकि संस्कृति से राजा का राष्ट्र सुगठित होता है, पवित्र होता है, राजा के राष्ट्र में मानवता का प्रसार होता है और स्नेह होता है। एक-दूसरे प्राणी में जब स्नेह होता है, राजा के राष्ट्र में तो संस्कृति से हुआ करता है, राजा के राष्ट्र में चक्र होना चाहिए। मानो चक्र नाम है, ऐसा राष्ट्र का विधान

होना चाहिए, ऐसा राष्ट्र का सुन्दर निर्माण हो, जिससे उस राजा के निर्माण को द्वितीय राजा भी सार्वभौम उसका एक नियम एक तुल्य होना चाहिए। हे राम! आज तुम्हें चक्र को अपनाना होगा। **चक्र नाम है संस्कृति का,** अपनी संस्कृति में मानवता और मानवता में स्नेह पवित्रवाद होना चाहिए। संस्कृति के गर्भ में, जब मानवता होती है, पवित्रता होती है, उसको प्रायः संसार अपना ही लेता है उसको संसार ठुकराता नहीं है, किसी भी काल में नहीं ठुकराता। इसीलिए तुम्हें विचार-विनिमय करना है। **हे राम! तुम संसार में प्रसार करो राष्ट्र हो या न हो, परन्तु तुम अपने चक्र को ले करके प्रसार करो।** सबसे प्रथम बेटा! मुझे भगवान् राम का जीवन स्मरण आता रहता है, उन्होंने अपने जीवन में, सर्वत्र जीवन में बेटा! यही प्रसार किया। मुनिवरो! देखो, संसार को चेताया और विश्व को बेटा! अपनी संस्कृति, अपने सदाचार की महानता ओत-प्रोत कराते हुए, उन्होंने बड़े-बड़े साम्राज्य को नष्ट किया क्योंकि उनकी प्रतिभा अपनाने की प्रवृत्ति भगवान् राम में नहीं थी। क्योंकि **त्याग प्रवृत्ति का सबसे प्रथम आदेश उन्होंने प्रदान किया था।** उसके पश्चात् बेटा! जब उनका चक्र चला, चक्र चलने के पश्चात् अयोध्या के राजा बनने लगे, उस समय वशिष्ठ जी से कहा था कि महाराज मैं यह जानना चाहता हूँ, कि शङ्ख किसे कहते हैं?

शङ्ख

उन्होंने कहा **शङ्ख नाम है वेद की ध्वनि का।** जिस राजा के राष्ट्र में मानो देखो, वह ध्वनि होती है, जहाँ देखो, भिन्न-भिन्न स्थानों पर यज्ञ होते हैं, पवित्रवाद होता है, ब्राह्मण उत्तम होते हैं मानो वेद के अनुकूल जिसका नियम होता है। राष्ट्र का निर्माण होता है, उस राजा के राष्ट्र में अशुद्धि नहीं आया करती है। हे राम! आज तुम्हें उत्तम बनना है, तो शङ्ख ध्वनि होनी चाहिये। मेरे प्यारे! शङ्ख ध्वनि नाम है ऋषिवर, मुनिवरो! देखो, उस ध्वनि का जिसमें महानता हो, जिसमें मानव के उद्गम विचार हों और उत्तम से उत्तम ब्राह्मण हों, त्यागी और तपस्वी मानव हों, जिससे बेटा! देखो, वह जटा-पाठ, घन-पाठ, माला-पाठ, विसर्ग-पाठ, नाना प्रकार का मानो देखो, पठन-पाठन कराते हुए, अपने राष्ट्र को उत्तम बनाते हुए चले जायें। ऐसा मुनिवरो! देखो, भगवान् राम से महर्षि वशिष्ठ जी ने कहा है।

मेरे प्यारे! जहाँ परमात्मा का नाम विष्णु है ऋषिवर! जहाँ आत्मा का नाम विष्णु है, वहाँ राजा का नाम भी विष्णु ही माना है। हमारे यहाँ दर्शनाचार्यों ने कहा है कि विष्णु नाम राजा को कहते हैं, और उस राजा को कहते हैं, जिस राजा के राष्ट्र में चार भुज होते हैं। सदाचार और शिष्टाचार और मुनिवरो! जहाँ सदाचार शिष्टाचार होता है, वहाँ क्षत्रिय गदा सहित हों, गदा हो और चक्र हो और पदम् हो मानो देखो, यह चारों चरण उसके राष्ट्र में होने अनिवार्य हैं। जहाँ पदम्, चक्र, गदा और शङ्ख होता है, उस राजा के राष्ट्र में बेटा! सदैव सदाचार की पवित्रता ओत-प्रोत होती रहती है।

विष्णु महाराज अक्षय क्षीरसागर में

यह है मुनिवरो! आज का हमारा वाक्य। मैं कोई विशेष चर्चा प्रगट करने नहीं आया हूँ, जैसा मैंने कल के वाक्यों में तुम्हें आदेश दिया था, कि कल हम वैज्ञानिक कुछ राष्ट्रीय चर्चा प्रगट करेंगे, आज का हमारा वह विषय अब पूर्ण होने जा रहा है। परन्तु जहाँ विष्णु नाम राजा को कहा है, वहाँ आत्मा को, योगी को विष्णु बनने के लिए आदेश दिया है। उन्होंने कहा है कि हे योगी! तू विष्णु बन। हमारे यहाँ कौन योगी विष्णु होता है? मुनिवरो! त्यागी तपस्वी को विष्णु कहते हैं। कौन से योगी को विष्णु कहते हैं, जो आत्मवेत्ता होते हैं। एक तो आत्मा को जानना प्राणों के द्वारा होता है। एक आत्मा को जानना बेटा! ज्ञान के द्वारा होता है, हमारे यहाँ कुछ ऐसा कहा है। मेरे प्यारे महानन्द जी ने मुझे एक समय वर्णन कराते हुए कहा है, क्या विष्णु महाराज तो अक्षय क्षीरसागर में रहते हैं, लक्ष्मी चरणों में ओत-प्रोत है, नारद अपनी वीणा सहित ध्वनि कर रहे हैं और गन्धर्व गुणगान गा रहे हैं। प्रभु यह क्या है? तो मुनिवरो! मुझे इनकी वार्त्ता जब स्मरण आती है, तो मेरा हृदय प्रसन्न हो जाता है। ऐसा इन्होंने, इनके वाक्यों की जो मीमांसा है मुनिवरो! वह इस प्रकार मानी गई है। मुनिवरो! विष्णु नाम आत्मा को माना है, विष्णु नाम आत्मा का है, अक्षयक्षीर सागर नाम ज्ञान को कहते हैं, और मुनिवरो! देखो, यह शेषनाग की शैय्या पर, शेषनाग किसे कहते हैं? शेषनाग कहते हैं जिसके पाँच फण होते हैं, मानो पाँच मुख होते हैं बेटा! इसी मानव के

शरीर में काम, क्रोध, लोभ, मद, मोह आदि ये पाँच फणों वाला शेषनाग है बेटा! जो मानव को प्रत्येक स्थान पर मृत्यु के लिए तत्पर रहता है। आज मानव को अति काम की वासना आती है, तो मृत्यु का कार्य होता है, अभिमान होता है, वहाँ भी मृत्यु है, परन्तु इन विषयों में से कोई सा विषय आ जाओ, वही मृत्यु में ले जाने वाला है। जब यह आत्मा अक्षयक्षीर सागर में होता है, मानो यह ज्ञान के सागर में होता है, ज्ञान और विवेक से इन काम, क्रोध, मद, लोभ आदि को नीचे दबा कर लिया जाता है। जब यह नीचे दब जाते हैं, इसके ऊपर ज्ञान में यही पवित्र आत्मा बेटा! ओत-प्रोत हो जाता है, और यह जो लक्ष्मी है, यह चरणों में ओत-प्रोत हो जाती है। आज इस लक्ष्मी के द्वारा मानव बेटा! ठगा जाता है। इसी लक्ष्मी के ऊपर मानव में नाना प्रकार की प्रवृत्तियाँ बन जाती हैं। वह प्रवृत्तियाँ शान्त होने के पश्चात्, वह लक्ष्मी उनके चरणों में ओत-प्रोत हो जाती है। क्योंकि आत्मवेत्ता पुरुष के चरणों में प्रायः लक्ष्मी हुआ करती है। इसी प्रकार आगे कहा कि नारद नाम हमारे यहाँ मन को कहा गया है, यह मन अपनी चञ्चल रूपी वीणा को ले करके, उस ज्ञानमयी आत्मा से कहा करता है मैं भी आपके सङ्ग आ गया हूँ। मुझे, मेरे ऊपर अनुपम कृपा करो।

मानव को अपने मानव तथ्य जान लेने की प्रेरणा

मुनिवरो! देखो, गन्धर्व नाम बुद्धि का है। यह बुद्धि जो नाना प्रकार से उद्गम विचार देती थी, उद्गम धाराएँ ग्रहण करती थी, यह भी अपनी नाना प्रकार की धाराओं को एकत्रित करके **ज्ञान रूपी आत्मा** के समीप आ जाती है, और कहती है कि प्रभु! मैं भी आपके समीप आ गई हूँ। तो वाक्य उच्चारण करने का अभिप्रायः ये, क्या योगी के लिए आदेश दिया है, जहाँ राजा को कहा है, मुनिवरो! वहाँ मानव को भी कहा है कि हे मानव! तू स्वयं भी विष्णु बन सकता है। परन्तु उस काल में जब तेरे द्वारा ज्ञान होगा, विवेक होगा मानो **विवेक और ज्ञान के द्वारा ही मानव विष्णु की उपाधि को देखो, प्राप्त कर सकता है।** उसको प्राप्त करने के पश्चात् मानवता के विशेष अङ्कुर मानव के हृदय में ओत-प्रोत हो जाते हैं।

आओ, मेरे प्यारे! आज हम विचार-विनिमय करते चले जायें ऋषिवर! विष्णु नाम परमात्मा का है, विष्णु नाम आत्मा का है, विष्णु नाम राजा का है और विष्णु आत्मवेत्ता योगी को भी विष्णु ही कहा जाता है।

आओ, मेरे प्यारे! आज का यह हमारा वाक्य क्या कहता चला जा रहा था ऋषिवर! आज हम ज्ञान और विज्ञान के उस क्षेत्र में जाना चाहते हैं, जहाँ नाना प्रकार के परमाणुओं को जानने के पश्चात्, हम नाना प्रकार के यन्त्रालयों में पहुँचते चले जायें। तो मेरे प्यारे! ऋषि-मुनियों ने कहा है ऋषिवर! कपिल मुनि जी ने विशेषकर कहा है, कि मानव को अपने मानव तथ्य को जान लेना चाहिए। मानो इसमें जो नाना प्रकार के यन्त्र हैं, उन यन्त्रों को जानने के पश्चात्, संसार में कोई वस्तु ऐसी नहीं रह जाती जिसको वह नहीं जान सकता। मेरे प्यारे महानन्द जी मुझे बारम्बार सङ्केत देते रहते हैं, राष्ट्रीयता के ऊपर उच्चारण करने का, आज मैंने कुछ संक्षिप्त परिचय दिया है। परन्तु उच्चारण करने का हमारा अभिप्रायः यह है, हमारे वाक्यों के परिचय देने का अभिप्रायः यह है कि मानव को राष्ट्रीयता, मानवता को अपनाने के पश्चात् बेटा! मानवता की पवित्र धारा उन तरङ्गों में ओत-प्रोत हो जाती है। और यदि मानव में नाना प्रकार का विवाद रहता है, घृणा रहती है, मुनिवरो! देखो, जैसे प्रायः किसी गृह में मानो घृणा की धाराएँ चलती है, और वह घृणा वाला जो गृह है, वह अच्छे पुरुषों के लिए बेटा! वह शमशान भूमि के तुल्य हो जाता है। इसी प्रकार जब राजा के राष्ट्र में, जब मानव में, समाज में बेटा! देखो, जब घृणा की दृष्टि आ जाती है, घृणा आ जाती है उस समय वायुमण्डल भी उसी प्रकार का बन जाता है। और जैसा वायुमण्डल होता है, वैसे ही प्रकृति के परमाणु बन जाते हैं, परन्तु उन परमाणुओं से इस प्रजा की सदैव हानियाँ होती रहती हैं।

प्रजा का गङ्गा स्नान

मुझे एक वाक्य स्मरण आता चला गया। एक समय बेटा! देवर्षि नारद मुनि इस संसार में विचरण करने के लिए आ पहुँचे। तो विचार-विनिमय उन्होंने क्या दृष्टिपात किया, सब प्रजा गङ्गा स्नान को चली जा रही थी। अब मुनिवरो! नारद

मुनि ने प्रजा से कहा हे प्रजाओ! तुम कहाँ जा रही हो? उन्होंने कहा कि महाराज हम तो गङ्गा स्नान जा रहे हैं, क्योंकि हमारे जो पाप है, वह गङ्गा में त्यागने के लिए जा रहे हैं। नारद मुनि ने विचारा, कि गङ्गा तो बड़ी पापिन है, वह सब प्रजा के पाप गङ्गा में चले जाते हैं। अब गङ्गा के द्वारा देवर्षि नारद मुनि जा पहुँचे। नारद मुनि ने गङ्गा से कहा हे गङ्गे! तुम इन प्रजा के सब पापों को अपने में धारण कर लेती हो, तुम तो बड़ी पापिन हो। मुनिवरो! गङ्गा ने कहा हे नारद मुनि! आप क्या उच्चारण करने लगे, मैं इन पापों को अपने द्वारा क्यों एकत्रित करती, प्रजा जैसे देती है ज्यों-के-त्यों मैं समुद्रों को अर्पित कर देती हूँ। अब नारद मुनि बेटा! समुद्रों के द्वारा जा पहुँचे। समुद्रों से बोले हे समुद्रो! तुम तो बड़े पापी हो। समुद्रों ने कहा कि महाराज! हम पापी क्यों होते? उन्होंने कहा महाराज! प्रजा के पाप गङ्गा ले लेती है, गङ्गा आपको अर्पित कर देती है, इसीलिए आप पापी हैं। नारद मुनि से समुद्रों ने कहा अरे! नारद यह पाप हमारे द्वारा नहीं रहते, ये पाप, मैं तो इन पापों को जैसे गङ्गा से आते हैं, वैसा ही मैं मेघ मण्डलों को अर्पित कर देता हूँ। अब बेटा! मेघ मण्डलों के द्वारा देवर्षि नारद मुनि जा पहुँचे। नारद मुनि ने मेघों से कहा कि हे मेघो! यह तुम क्या कर रहे हो। मानो जैसे प्रजा गङ्गा को पाप अर्पित करती है, गङ्गा समुद्रों को देती है, समुद्र तुम्हें दे देते हैं। उस समय मेघों ने कहा हे नारद! तुम बड़े भोले हो यह पाप मेरे द्वारा भी नहीं होते, जैसा समुद्र मुझे अर्पित करते हैं वैसे प्रजा के पाप, प्रजा के द्वारा मैं वृष्टि रूप में प्रसारण कर देता हूँ।

मुनिवरो! वाक्य उच्चारण करने का अभिप्रायः यह है कि **मानव के जितने अशुद्ध विचार होंगे, उतना ही वायुमण्डल अशुद्ध होगा, और जितना वायुमण्डल अशुद्ध होगा, उतना देखो, प्रकृति में, इस पृथ्वी पर मानव के पाप, मानव के द्वारा आ जाते हैं।** कहीं अतिवृष्टि हो जाती है, कहीं अनावृष्टि है, कहीं अतिवृष्टि है, उसी प्रकार यह प्रकृति का चक्र चलता रहता है। इसीलिए वाक्य उच्चारण करने का अभिप्रायः यह कि **जब मानव को इस प्रकृति में कल्पना करनी है, विचारना है, तो ऊँचे से ऊँचा विचारों, जिससे तुम्हारी मानवता ऊँची बने, राष्ट्र ऊँचा बने, पवित्रता आये, जिससे मुनिवरो! देखो, यह संसार का प्रत्येक मानव, संसार का प्रत्येक प्राणी पवित्रता को प्राप्त**

होता रहे। यह है बेटा! आज का हमारा वाक्। आज के वाक्यों का अभिप्रायः यह है कि हमारे यहाँ, हमारा जो जीवन है वह बड़ा महान् है, परमपिता परमात्मा ने इस मानव शरीर को रचा है, यह एक प्रकार का यन्त्रालय है, इसको विचारना, इसी में अनुसन्धान करना, नाना प्रकार के यन्त्रों को जानना। मुनिवरो! देखो, हम भौतिक विज्ञानवेत्ता बनें, आध्यात्मिक विज्ञानवेत्ता बनें, दोनों प्रकार के विज्ञान को जानना हमारा कर्त्तव्य है। क्योंकि मैं इसका विरोधी नहीं हूँ, कि संसार में भौतिकवाद नहीं होना चाहिए, होना चाहिए, परन्तु भौतिकवाद के साथ में मुनिवरो! आध्यात्मिकवाद होना चाहिए। अन्यथा **भौतिकवाद जितना होगा, उतना अभिमान होगा और जितना आध्यात्मिकवाद होगा उतनी नम्रता होगी, उतना उज्ज्वलपन होगा और जितना उज्ज्वलपन होगा, और नम्रता होगी, उतना ही हमारा सदाचार, शिष्टाचार, मानववाद पवित्र बनता रहेगा।** बेटा! यह आज का हमारा वाक्य अब समाप्त होने जा रहा है।

आज के हमारे इन वाक्यों का अभिप्रायः यह कि हम विष्णु की आज्ञा में चलें, जैसा विष्णु हमें आदेश देते हैं, हम विष्णु की कल्पना करते रहें। हमें विष्णु बनना है, विचारशील बनना है, यह है बेटा! हमारा आज का वाक्। अब वेदों का पाठ होगा इसके पश्चात् यह वार्त्ता समाप्त होती चली जायेगी।

पूज्य महान्नद जी—गुरुदेव! वाक्य बहुत सुन्दर परन्तु समय बड़ा सूक्ष्म, धन्य हो!

पूज्यपाद-गुरुदेव—हास्य.... चलो, बेटा! कल समय मिलेगा तो कल अधिक चर्चाएँ प्रगट करेंगे, अब वेदों का पाठ होगा।

ओ३म् ब्रह्म भविता मानं भगा गृहवन्धना मानं देवाः।
ओ३म् सर्वाणि गता रयीष्णा मानं भागाः।
ओ३म् देवं सग्गृहिवन्धना सविता रयी भद्रा मानं भागाः।
ओ३म् ब्रह्मणा ब्रह्म वर्चोसि दयगृतं देवं मया।

दिनाँक : 12 मार्च, 1969

॥ ओ३म् ॥

यज्ञ का स्वरूप

आज मैं संसार को दृष्टिपात करने लगता हूँ तो इस मृत मण्डल में जहाँ हमारी यह आकाशवाणी जा रही है वहाँ एक यज्ञ भी दृष्टिपात करता हूँ। यह यज्ञ आधुनिक काल के कर्मकाण्ड की दृष्टि से तो सजातीय है परन्तु परम्परा का जो कर्मकाण्ड है उसका मैं वर्णन नहीं करने आया हूँ। विचार क्या? वह कर्मकाण्ड, वह विचार बहुत ही ऊँचा है। आज तो मुझे ऐसा प्रतीत होता है आगे आने वाला जो समय है, जगत है उसमें यज्ञ रूढ़ी बनकर न रह जाए। यज्ञ ही रूढ़ी बनकर रह गया तो यह वेद का ह्रास हो जायेगा, ऐसा न हो जाए। वास्तव में ऐसा सम्भव तो नहीं है क्योंकि समय-समय पर महापुरूषों का आगमन होता रहा है। महापुरूषों के आगमनों से वह रूढ़ी नहीं बनती अथवा रूढ़ी बनने में कोई आश्चर्य भी नहीं क्योंकि समय-समय पर महापुरूषों ने जिस आदेश को समाज को दिया उस आदेश से समाज दूरी हो गया। जब दूरी हो जाता है तो मानो वह रूढ़ी बन जाता है। इसलिए महापुरूषों ने जो आदेश दिया है उन आदेशों से दूरी नही होना चाहिए। अपने कर्मकाण्ड को निश्चित बना देना चाहिए। मैं भविष्य का विचार प्रकट करना नहीं चाहता परन्तु रूढ़ी न बन जाए। रूढ़ी को नष्ट करने के लिए मानव का एक समाज होना चाहिए और वह यज्ञों के ऊपर अनुसन्धान करने वाला हो। जिससे हम संसार को यह सन्देश दे सकें कि उस वेदी के नीचे आ करके तुम्हारे जो नाना प्रकार के दूषित अणु एकत्रित कर लिए हैं उन अणुओं का विनाश हो सकता है, यह यज्ञ की सुगन्धि से ही हो सकता है।

यहाँ संसार में विज्ञान समय-समय पर आता रहा है। समय-समय पर उस विज्ञान ने प्रगति की है। आज का संसार प्रगति कर रहा है कोई वैज्ञानिक चन्द्रमा पर शयन करने जा रहा है, कोई करने के लिए तत्पर हो रहा है। कोई शुक्र की कल्पना कर रहा है, कोई पृथ्वी और चन्द्रमा के मध्य में कोई स्थान

बनाने का विचार कर रहा है। ऐसे विचार वैज्ञानिकों के मस्तिष्कों में नवीन नहीं है क्योंकि यह परम्परा से मानव के मस्तिष्कों में, महापुरूषों के मस्तिष्कों में, राष्ट्र के मस्तिष्कों में यह प्रायः विचार आता रहा है।

रहा यह वाक्य कि जो मानव धर्म है उसका ह्रास हो रहा है। परन्तु यह धर्म का ह्रास नहीं है क्योंकि धर्म किसे कहते हैं? आज कोई वैज्ञानिक यह नहीं कह रहा है कि मानव को चरित्रहीन हो जाना चाहिए। कोई वैज्ञानिक यह नहीं कह रहा है कि कर्म नहीं करना चाहिए। कोई वैज्ञानिक यह नहीं कह रहा कि आज तुम प्रभु को स्वीकार न करो। परन्तु आज का वैज्ञानिक इस वाक्य को उच्चारण कर रहा है कि आज हम इस प्रकृति के गर्भ से संसार में सब कुछ प्राप्त कर सकते हैं। इसी प्रकार आज मानव इस प्रकार के विचार में आ गया है कि आज हम जो विचार दे रहे है, वैज्ञानिक विचार है यही सर्वोपरि विचार है।

हमारे ऋषि-मुनियों ने यह कहा है कि यह जो विज्ञान है, परमाणुवाद है, चन्द्रयान है, नाना प्रकार के यान हैं, यह परमाणुवाद जहां यह समाप्त होता है वहां आध्यात्मिकवाद का, धर्म का, प्रारम्भ हो जाता है। जब आध्यात्मिक युग में जाने का मानव प्रयास करता है उस समय यह दृष्टिपात आने लगता है। जब हम उस युग में चले जाते हैं जिस युग में आत्मा को उन्नत बनाया जाता है जिसमें यौगिक अपनी प्रक्रियाओं को जानने लगता है जिस काल में यज्ञ की सुगन्धि ही सुगन्धि समाज में ओत-प्रोत हो जाती है, परमाणुवाद को यज्ञ की सुगन्धि निगल जाती है।

परमाणु का अन्तिम परिणाम–मेरे पूज्यपाद-गुरूदेव ने कई समय वर्णन कराया, आज मैं भी उन वाक्यों का वर्णन कराने आ गया हूँ कि आज का जो मार्ग है वह मार्ग क्या है? वेद का जो मार्ग है उसको प्रत्येक मानव को अपनाना है। **वह समय निकट आ रहा है जब इस महान यज्ञ की वेदी के नीचे यह सर्वज्ञ विज्ञान आने वाला है।** आज जब हम इस राष्ट्र भूमि से दूसरे राष्ट्रों का भ्रमण करते हैं इस सूक्ष्म शरीर के द्वारा, तो हमें ऐसा प्रतीत होता है कि यह जो परमाणुवाद आज हमने निश्चय किया है

एकत्रित किया है, इसका अन्त परिणाम क्या होगा? तो उस समय यह विचारते हैं कि इसका परिणाम केवल अग्नि ही होगी। इसका परिणाम और क्या बनेगा, केवल अग्नि के सिवाय। तब वह कहते हैं कि इस अग्नि को शान्त करने के लिए हमें क्या करना चाहिए इस अग्नि को निगलने के लिए कौन सा यत्न होना चाहिए जिससे हम स्वयं अपने-अपने जीवन की सुरक्षा कर सकें।

जब यह विचारते हैं तो वह जो गो घृत है, उसमें ऐसा कोई तत्व है जिसमें इस परमाणुवाद को निगलने की शक्ति है। परन्तु अब तक उसका कर्मकाण्ड नहीं आया। उसका जब कर्मकाण्ड आता है तो इस भारत भूमि में, भारद्वाज वाली भूमि में आकर के उस विद्या को पान करने वाला यह समाज बनेगा। मुझे ऐसा प्रतीत होता है। मैं आज भविष्य की चर्चा नहीं प्रकट कर रहा हूं। यह वाक्य इसलिए उच्चारण कर रहा हूं क्योंकि यज्ञ एक ऐसा ही कर्म है जो सुगन्धि देता है। दुर्गन्धि नहीं देता। केवल सुगन्धि ही सुगन्धि देता है। समाज के लिए जहां यह होने वाला है वहां ऐसा भी किसी काल में **प्रतीत होता है कि कुछ ही समय रह रहा है जब यह समाज, यह जो जगत अपने कर्मों की अग्नि में भस्म होने वाला है।** ऐसा भी प्रतीत होता है क्योंकि यह जो नाना प्रकार का यन्त्रवाद है, यह जो नाना प्रकार की मानव के प्रति घृणा का एक वातावरण अपने हृदय में ओत-प्रोत कर लिया है, इस **घृणा का परिणाम भी अग्नि ही होता है।** एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र को नष्ट करना चाहता है, एक मानव दूसरे मानव को निगलना चाहता है यह क्या है? स्वार्थ की अग्नि प्रत्येक मानव के हृदय में ओत-प्रोत हो गई है। वह जो स्वार्थ रूपी अग्नि है वह किसी अन्य मानव को नष्ट नहीं करती उसी मानव को नष्ट का देती है जिस मानव के हृदय में वह अग्नि बलवती हो गई है।

पूज्यपाद महानन्द जी

दिनाँक : 16 अक्टूबर, 1971

॥ ओ३म् ॥

ऋषियों के उद्‌गार

1. आत्मविश्वास उसके द्वारा होता है जो त्याग और तपस्या में परणित रहता है।
2. आज वही व्यक्ति महान् बना करता है जो प्रभु का विश्वासी होता है, प्रभु की जिसमें वेदना होती है।
3. आर्य वही होता है जो प्रभु का अटूट विश्वासी होता है।
4. चिन्ता यह करो कि हमें कुछ बनना है। हम नहीं बनेंगे तो आज हम दूसरों को बना ही नहीं सकेंगे।
5. छात्र बल जो है, वह सबसे महान् बल है।
6. राष्ट्र का जो निर्माण है वह केवल सदाचार के आधार पर होता है।
7. क्रियाशील गुरु जब होते हैं, तो राष्ट्र और समाज सब पवित्र होते हैं।
8. मानव को किसी भी काल में हताश नहीं होना चाहिये।
9. मानव जीवनमुक्त की प्रवृत्तियों में जा सकता है।
10. करोड़ों-करोड़ों वर्षों के संस्कार भी मानव भोगा करता है।
11. ब्राह्मण कहते हैं त्याग और तपस्या को।
12. ब्राह्मण उदार होना चाहिये, उसमें अभिमान नहीं होना चाहिये।
13. जब तक जीवात्मा के साथ भोगवाद है, तब तक ही जीवन है।
14. आध्यात्मिकवाद में मृत्यु का कोई अस्तित्व नहीं है।
15. जहाँ प्रीति नहीं है, वहाँ धर्म भी नहीं है।
16. जब हमारे द्वारा ज्ञान, विवेक और महानता होगी उसी काल में हम ऊँचे बनेंगे।
17. हम अपनी मानवता की स्वयं रक्षा करेंगे तो हमारा जीवन ऊँचा बनेगा।
18. हम ओ३म् का चिन्तन करने वाले बनें।
19. प्राणी कितना ही रूढ़िवादी हो परन्तु ओ३म् शब्द उच्चारण करना उसके लिए अनिवार्य हो जाता है।
20. हिंसा उस मानव के द्वारा होती है, जो मानव अपने कर्त्तव्य का पालन नहीं करता है।

योगनिष्ठ पूज्यपाद ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज (शृङ्गी ऋषि जी) की अमृतवाणी संहिता के रूप में

1.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 1)	110.00
*2.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 2)	110.00
*3.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 3)	120.00
*4.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 4)	120.00
5.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 5)	160.00
6.	Yogic Wisdom of Ancient Rishis	100.00
7.	वेद पारायण-यज्ञ का विधि विधान	40.00
8.	आत्म-लोक	45.00
*9.	धर्म का मर्म	50.00
10.	शंका-निवारण	40.00
11.	यज्ञ-प्रसाद अर्थात् यज्ञ का महत्त्व	50.00
12.	आत्मा व योग-साधना	40.00
*13.	देवपूजा	50.00
14.	अतीत का दिग्दर्शन (भाग 1)	150.00
15.	अतीत का दिग्दर्शन (भाग 2)	150.00
16.	अतीत का दिग्दर्शन (भाग 3)	140.00
17.	रामायण के रहस्य	50.00
18.	यज्ञ एवं औषधि विज्ञान	50.00
19.	महाभारत के रहस्य	35.00
20.	अलङ्कार-व्याख्या	45.00
21.	रावण-इतिहास	65.00
22.	महाराजा-रघु का याग	35.00
23.	वनस्पति से दीर्घ-आयु	40.00
24.	मोक्ष प्राप्ति का मार्ग	40.00
25.	चित्त की वृत्तियों का निरोध	50.00
26.	आत्मा, प्राण और योग	40.00
27.	पञ्च-महायज्ञ	45.00
28.	अश्वमेघ-याग और चन्द्रसूक्त	50.00
29.	याग-मन्जूषा	45.00
30.	आत्म-दर्शन	35.00
31.	पुत्रेष्टि-याग और मातृ-दर्शन	40.00
32.	याग और तपस्या	70.00
33.	यागमयी-साधना	45.00
34.	यागमयी-सृष्टि	40.00
35.	याग-चयन	50.00
36.	दिव्य-रामकथा	150.00
37.	ज्ञान-कर्म-उपासना	50.00
38.	दिव्य-ज्ञान	45.00
39.	महाभारत एक दिव्य दृष्टि	140.00
40.	महर्षि-विश्वामित्र का धनुर्याग	50.00
41.	आत्म-उत्थान	45.00
*42.	तप का महत्त्व	50.00
43.	अध्यात्मवाद	45.00
44.	ब्रह्मविज्ञान	45.00
45.	वैदिक-प्रभा	40.00
46.	प्रकाश की ओर	40.00
47.	कर्तव्य में राष्ट्र	45.00
48.	वैदिक-विज्ञान	40.00
49.	धर्म से जीवन	40.00
50.	आत्मा का भोजन	45.00
51.	साधना	40.00
52.	त्रेताकालीन-विज्ञान	45.00
53.	यज्ञोमयी-विष्णु	45.00
54.	यौगिक प्रवचन माला भाग-6	110.00
55.	स्वर्ग का मार्ग	50.00
*56.	यौगिक प्रवचन माला भाग-7	110.00
57.	माता मदालसा	60.00
*58.	यौगिक प्रवचन माला भाग-8	110.00
*59.	यौगिक प्रवचन माला भाग-9	110.00
60.	यौगिक प्रवचन माला भाग-10	110.00
61.	याग एक सर्वाङ्ग पूजा	110.00
62.	यौगिक प्रवचन माला भाग-11	150.00
*63.	यौगिक प्रवचन माला भाग-12	110.00
64.	मानव कल्याण की चर्चाएँ	60.00
65.	प्रभु-दर्शन	60.00
*66.	यौगिक प्रवचन माला भाग-13	110.00
*67.	समाज उत्थान का मार्ग	60.00
*68.	यौगिक प्रवचन माला भाग-14	110.00
*69.	ब्रह्म की ओर	60.00
*70.	ईश्वर मिलन	60.00
*71.	यौगिक प्रवचन माला भाग-15	110.00
*72.	यौगिक प्रवचन माला भाग-16	110.00
*73.	नैतिक शिक्षा	60.00
*74.	यौगिक प्रवचन माला भाग-17	110.00
*75.	आत्मिक ज्ञान	60.00
*76.	यौगिक प्रवचन माला भाग-18	120.00
*77.	यज्ञ विज्ञान	100.00
*78.	यौगिक प्रवचन माला भाग-19	120.00
79.	मानव दर्शन	150.00
80.	यौगिक प्रवचन माला भाग-20	160.00
	पूज्यपाद ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज एवम् कर्मभूमि लाक्षागृह	10.00

*सहजिल्द का मूल्य 20 रु. अतिरिक्त है।

मासिक सहयोग

सु. कुमारी नीरू अबरोल, के-3 लाजपत नगर-III नई दिल्ली–	
स्मृति–श्रीमति शान्ति अबरोल व श्री देवराज अबरोल	1001 रुपये
श्री संजीव त्यागी (दिनकरपुर) फरीदाबाद, हरियाणा	1000 रुपये
श्री ज्ञानेश द्विवेदी	1000 रुपये
श्री राकेश शर्मा, विराट नगर, पानीपत, हरियाणा	501 रुपये
श्री कर्ण तुली, के-3 लाजपत नगर-III, नई दिल्ली	501 रुपये
श्रीमती रुचिका तुली, के-3 लाजपत नगर-III, नई दिल्ली	501 रुपये
श्री अरुण त्यागी, राजनगर, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश	500 रुपये
श्री विनोद त्यागी सुपुत्र श्री जयप्रकाश त्यागी मकनपुर, गाजियाबाद	500 रुपये
श्री अरुण तुली, के-3 लाजपत नगर-III, नई दिल्ली	251 रुपये
श्रीमती सुखमणी तुली, के-3 लाजपत नगर-III, नई दिल्ली	251 रुपये
मा. कार्तिक त्यागी सुपौत्र श्री रामनिवास त्यागी ग्राम भंगेल, नोएडा	251 रुपये
मा. लोमश त्यागी सुपौत्र श्री रामनिवास त्यागी ग्राम भंगेल, नोएडा	251 रुपये
डॉ. शुचि, डॉ. राजीव चावला, आणद, गुजरात	250 रुपये
मास्टर कवन्धि त्यागी, रामप्रस्थ, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश	101 रुपये
मास्टर सिद्धार्थ त्यागी, अँकुर अपार्टमैन्ट, पटपड़ गंज, दिल्ली	101 रुपये
कुमारी अञ्जलि त्यागी, रामप्रस्थ, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश	101 रुपये
मास्टर सात्विक त्यागी, अँकुर अपार्टमैन्ट, पटपड़ गंज, दिल्ली	101 रुपये
मास्टर अभ्युदय त्यागी, न्यू जर्सी, अमेरिका	101 रुपये
कुमारी प्रीक्षा त्यागी, न्यू जर्सी, अमेरिका	101 रुपये
मास्टर कबीर, कुमारी रिधानी मल्हौत्रा, ब्रज विहार, गाजियाबाद	101 रुपये
कुमारी सृष्टा, मास्टर अव्युक्त, पश्चिम एन्कलेव, नई दिल्ली	101 रुपये

मासिक सहयोग का आह्वान

आप सभी से समिति विनम्र भाव से प्रार्थना करती है कि मासिक सहयोग की राशि समय पर प्रेषित करने का सहयोग करें जिससे प्रकाशन निरन्तर ऊर्ध्वागति को प्राप्त होता रहें। **वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.)**

योगमुद्रा में प्रवचन करते हुए पूज्यपाद-गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज

उद्‌बोधन

वसुन्धरा के नाना पर्यायवाची हैं, जैसे वसुन्धरा पृथ्वी को कहते हैं जो नाना प्रकार के खाद्य और खनिज पदार्थों को प्रदान करने वाली है, वह वसुन्धरा, जिसके गर्भ में हम नाना प्रकार की वनस्पतियों के द्वारा पनपते रहते हैं। तो इसीलिए हम उस माता को वसुन्धरा कहा करते हैं। जब हम यह विचारने लगते हैं कि मानव जीवन से उसका घनिष्ठ सम्बन्ध है, तो हमारा हृदय विशालता को प्राप्त होने लगता है। जब हम अपने मन में यह अनुभव करते हैं, अपने हृदय में स्वयँ यह अनुभव करते हैं कि वह तो वास्तव में महामना है। वह माता महामना है, हमारा कल्याण करने वाली है।

पूज्यपाद-गुरुदेव

वर्ष 50 : अंक : 584
फरवरी 2022

मूल्यः
पन्द्रह रुपये

RNI No. 23889/72
Delhi Postal R.No. DL (S)-20/3220/2021-2023
Licence to Post without prepayment
U (SE)-70/2018-2020
POSTED AT KRISHNA NAGAR HP.O. N.D. ON 10/11-2-2022
Published on 5th day of the same month

वर्ष 50 : अंक : 584
फरवरी 2022

मूल्यः
पन्द्रह रुपये

RNI No. 23889/72
Delhi Postal R.No. DL (S)-20/3220/2021-2023
Licence to Post without prepayment
U (SE)-70/2018-2020
POSTED AT KRISHNA NAGAR HP.O. N.D. ON 10/11-2-2022
Published on 5th day of the same month